ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
रविवार, 05 मार्च 2017
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र
सप्ताह रविवार, 05 मार्च 2017 से 11 मार्च 2017
फाल्गुन शु. – 08 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 65, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

ऋषि जन्मोत्सव पर अखिल भारतीय वैदिक संगीत संगोष्ठी का आयोजन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस पर अखिल भारतीय वैदिक संगीत गोष्ठी का आयोजन 20 और 21 फरवरी 2017 को समारोह पूर्वक किया गया जिसमें 90 डी. ए. वी. स्कूलों के 112 संगीत अध्यापकों ने भाग लेकर वैदिक भजनों और गीतों की प्रस्तुति दी। दोनों दिन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सभा के पदाधिकारियों एवं पधारे हुए प्रतियोगियों ने भाग लिया। दो दिन तक चली प्रतियोगिता के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री प्रबोध महाजन, उपप्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली ने संगीत शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वैदिक विचारों और सिद्धांतों से परिपूर्ण गीतों और भजनों के माध्यम से आर्य समाज के प्रचार प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायें। साथ ही कहा कि यह बहुत ज़रुरी हो गया कि अध्यापक स्वयं आर्य समाज के विचारों और सिद्धांतों से परिचित हों जिससे वे छात्रों में वैदिक मूल्यों की स्थापना करने में समर्थ हो सके।

इस प्रतियोगिता मे दिल्ली विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसरों– डॉ. अनुपम महाजन, प्रो. डॉ. दीप्ति ओमचेरी भल्ला, श्रीमती उमा गर्ग, को निर्णायक के रुप आमन्त्रित किया गया था। प्रतियोगिता में पिछले वर्ष से अधिक कड़ा मुकाबला देखने को मिला। सर्वसम्मति से निम्न प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया।

प्रथम पुरस्कार श्री तुलसीदान वर्मा, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, तलवण्डी कोटा, राजस्थान, द्वितीय पुरस्कार श्री नीलांजन मित्रा, डीएवी पब्लिक स्कूल, एन.आई.टी, आदित्यपुर जमशेदपुर, झारखण्ड एवं श्रीमती बबली दास डी ए वी पब्लिक स्कूल, सै. 14, गुडगावा, हरियाणा तथा तृतीय पुरस्कार श्री नरेन्द्र कुमार, डी ए वी, पब्लिक स्कूल, लॉरेन्स रोड, अमृतसर, पंजाब एवं श्री रजनीश कुमार डी ए वी पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार, नई दिल्ली–110092 को मिला। इसके अतिरिक्त श्री सुरेन्द्र कान्त शर्मा डी ए वी पब्लिक स्कूल, अशोक विहार–4, दिल्ली, श्री राजेश शर्मा डी ए वी पब्लिक स्कूल, श्रेष्ठ विहार, नई दिल्ली–110092, श्री राधा बल्लभ सक्सैना डी ए वी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर, जयपुर, राजस्थान को सान्त्वना पुरस्कार दिया गया।

सभा की ओर से विजेताओं में प्रथम को रू. 11,000/– द्वितीय आने वाले दो प्रतियोगियों को रू. 7,500/– प्रति व्यक्ति, तृतीय आने वाले दो प्रतियोगियों को रू. 5,000/– प्रति व्यक्ति और तीन प्रतियोगियों को सान्त्वना पुरस्कार स्वरूप रू. 3,000/–प्रति व्यक्ति प्रदान किए गए।

इस संगीत संगोष्ठी में आर्य समाज (अनारकली), आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी ए वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के अधिकारी श्री रामनाथ सहगल, श्री अजय सूरी, ब्रि. ए.के. अदलखा, श्री सत्यपाल आर्य, श्री आर एस शर्मा, प्रि. मोहन लाल, श्री मामचन्द रिवारिया, आदि ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री प्रबोध महाजन, उपप्रधान प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने विजेताओं को पुरस्कृत किया।

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, सैक्टर-15ए, चण्डीगढ़ में वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

आर्य महिला संगठन (चण्डीगढ़, पंचकूला, मोहाली) की प्रधान श्रीमती कमलेश थरेजा एवं श्रीमती उषा जीवन व अन्य महिलाओं के सहयोग से डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, सैक्टर–15ए, चण्डीगढ़ में धर्मशिक्षा (वैदिक) प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा छठी से कक्षा नवम् तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में वैदिक प्रश्न एवं सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गए। प्रतिभागियों ने बड़े उत्साहपर्वक भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। अंत में विद्यार्थियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों को आर्य समाज के संस्कार प्रदान करना था। प्रांचार्या श्रीमती अनुजा शर्मा जी ने समस्त अतिथिगणों का धन्यवाद किया तथा प्रतिभागियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। - स. प्र. समु. ७

संपादक – पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 05 मार्च 2017 से 11 मार्च 2017

हे सोम! हृदय-कलश में प्रवेश करो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरिताति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ९.७०.९

ऋषिः रेणुः वैश्वामित्रः। देवता पवमानः सोमः। छन्दः जगती।

● (सोम) हे सोम परमात्मन्! (तू), (वृषा) वर्षक (होता हुआ), (देववीतये) दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, (पवस्य) प्रवाहित हो, (इन्द्रस्य) आत्मा के, (हार्दि) हृदय-रूप, (सोमधानं) सोम-कलश में, (आविश) प्रविष्ट हो।, (बाधात्) बाधे जाने से, (पुरा) पहले, (नः) हमें, (दुरिता अति) पापचरणों से लंघाकर, (पारय) पार करदे। (क्षेत्रवित्) मार्ग का ज्ञाता, (विपृच्छते) विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, (दिशः) दिशाओं को, (आह हि) बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करने वाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय-रूप सोम-कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम-पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी-कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप-भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप-कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप-मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप-ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार-रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछने वाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा-ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन-पोत भव-सागर में डूबकर नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

आनन्द गायत्री कथा

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि सद्व्यवहार के साथ गृहस्थाश्रम को चलाओ, किन्तु मोह में मत फंसो। दुःख चार प्रकार के होते हैं। एक वे जिन्हें हम अपने लिए स्वयं उत्पन्न करते हैं, दूसरे वे जो ऐसी इच्छाओं को मन में एक स्थान देने से उत्पन्न होते हैं, जिनका पूर्ण होना सम्भव नहीं, तीसरे वे जो अभिमान के कारण होते हैं और चौथे वे जो समाज के कारण, प्रकृति के कारण, देश की दशा के कारण, जाति-पाँति के बन्धनों के कारण होते हैं। इन चार प्रकार के दुःखों में से केवल अन्तिम प्रकार के दुःख हमारे वश में नहीं, शेष तीन प्रकार के दुःख सब के सब हमारे कारण ही होते हैं। महर्षि चरक ने अपने आयुर्वेद शास्त्र में स्पष्ट लिखा है। "प्रत्येक प्रकार के शारीरिक रोग हमारी मूर्खता के कारण पैदा होते हैं। इस प्रकार मानसिक दुःख भी हम अपने लिए ही पैदा करते हैं।

—अब आगे

एक थे सेठ साहब, बहुत बड़े, बहुत धनाढ्य। कितने ही लोगों पर कितने ही अभियोग उन्होंने चला रखे थे। किसी अभियोग में जीत होती तो प्रसन्न होते, 'हार' होती तो दुःख-सागर में डूब जाते। एक दिन वे पालकी में बैठे कचहरी को जा रहे थे। चार कहारों ने पालकी को उठा रखा था। सेठ थे मोटे। कहारों को पसीना छूट रहा था; काँप रहे थे। किन्तु ज्यों-ज्यों कचहरी समीप आ रही थी, त्यों-त्यों कहार अपने दुःख के रहते हुए भी सुखी हो रहे थे कि थोड़ी ही देर बाद वह बोझ कन्धों से उतर जाएगा। किन्तु पालकी के अन्दर बैठे हुए सेठ साहब कचहरी की ओर उठते हुए प्रत्येक पग पर उदास होते जाते थे; चिन्ता के सागर में डूबे जाते थे कि न्यायालय ने आज निर्णय देना है। न जाने मेरे रुपये मारे जाएँगे! यदि सारे-के-सारे ही मारे गए तो यह बड़ा अनर्थ होगा; और अब समय आ रहा है अत्यन्त समीप! बोझ को उठाते हुए कहार सोचते हैं-समीप, समीप, समीप! और सुखी होते हैं। पालकी में बैठा हुआ सेठ यह सोचता है- समीप, समीप, समीप! और दुःखी होता है। बात एक है। एक को सुख होता है, दूसरे को दुःख।

सुख और दुःख वास्तव में किसी दशा का नाम नहीं, अपितु केवल दृष्टिकोण का नाम है। दृष्टिकोण को बदल दो, बहुत-से दुःख सुख में बदल जाएँगे।

'योग' और 'सांख्य' दर्शन के कर्त्ता महर्षियों ने तीन प्रकार के दुःखों का वर्णन किया है-परिणाम-दुःख अर्थात् अन्त में उत्पन्न होनेवाला दुःख, ताप-दुःख अर्थात् जो विचार से पैदा होता है, और संस्मरण-दुःख अर्थात् वह दुःख जो पुराने भोगे हुए दुःखों को याद करते रहने से जन्म लेता है। पहले प्रकार के दुःखों में से एक है यौवन का बुढ़ापे में परिवर्तन कोई चाहे या ना चाहे यौवन का बुढ़ापे में परिवर्तन होना अवश्यम्भावी है। इस जीवन की समाप्ति है अवश्य। ईश्वर की अमर कविता 'ऋग्वेद' के पहले मण्डल के 61वें सूक्त की दसवीं ऋचा है-

"नमो न रूपं जरिमामिनाति पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि"

इस ऋचा के अर्थ को समझिए! इसमें यौवन और बुढ़ापे का, जीवन और मृत्यु का चित्र अंकित किया है। इससे अधिक कवितामय चित्र भी आपने कभी देखा है? इस वेद-मन्त्र का भावार्थ है-"जब आकाश में घने गहरे बादल छा जाते हैं, जब वे पानी से पूरे भरपूर हो उठते हैं, तब एक-एक बूँद करके वर्षा होने लगती है। अन्त में वर्षा समाप्त हो जाती है। आकाश स्वच्छ हो जाता है। इसी प्रकार बुढ़ापा आकाश में छाए बादलों की भाँति रूप-यौवन को नष्ट कर देता है।" जीवन का प्रत्येक श्वास बूँद-बूँद करके वर्षा की भाँति बरसता है और तब एक दिवस आता है जब जीवन का बादल समाप्त हो जाता है, आकाश स्वच्छ हो जाता है। यौवन के बादलों की घनघोर घटाएँ हल्की पड़ जाती हैं और मृत्यु आ टपकती है।

हाँ मेरे भाई, बेटे, मेरी बच्ची! आकाश निर्मल हो जाता है। कवि ने कहा था-

जो जा के न आए, वह यौवन देखा,
जो आके न जाए, वह बुढ़ापा देखा।

इसी प्रकार परिणाम का, परिवर्तन का यह दुःख होता है। कपड़े हैं नए, धीरे-धीरे मैले हो रहे हैं। अन्त में एक दिन इन्हें उतार देना है। विद्युत् की टॉर्च में बैट्रियाँ डाली गई हैं नई, किन्तु धीरे-धीरे वे समाप्त हो रही हैं; एक दिन इन्हें निकालकर फैंक देना है। इस तरह निरन्तर होते हुए परिवर्तन से जो दुःख उत्पन्न होता है, उसे परिणाम का दुःख कहते हैं। इसी प्रकार ताप-दुःख है-सोचने से उत्पन्न होनेवाला दुःख, जो केवल चिंता के कारण जन्म लेता है। एक मनुष्य है अच्छा-भला। घर में प्रत्येक प्रकार की सुविधा है-धन है, माया है,

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

21वीं शताब्दी में नारी की चुनौतियाँ

● श्रीमती रीना जायसवाल

नारी होना ही अपने आप में चुनौती है। नारी शब्द के साथ संघर्ष हमेशा जुड़ा रहता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त संविधान द्वारा स्त्री पुरुष समानता की घोषणा की गई, लोकतान्त्रिक आजादी की परिकल्पना साकार करने की योजनाएँ बनायी गईं। लोकतांत्रिक मूल्यों के विस्तार के साथ–साथ स्त्रियों में अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता बढ़ी है। अपने अधिकरों के लिए सशक्तीकरण का रास्ता अपनाया।

सशक्तीकरण एक प्रक्रिया है, जिससे लोग अपने जीवन पर चेतना के विकास द्वारा नियंत्रण करते हैं अर्थात् सशक्तीकरण बदलाव को सुगम बनाता है और व्यक्ति को उसकी इच्छा के अनुरूप सक्षम बनाता है। सशक्तीकरण एक अनुभूति है जो किसी को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मानसिक रूप से सक्रिय बनाता है। आज महिलाओं को सशक्त होकर आगे बढ़ना चाहिए जिससे वह अपने सामर्थ्य एवं योग्यता को पूरी तरह साकार कर सके।

21वीं शताब्दी तक पहुँचते–पहुँचते नारी ने पुरुष के वर्चस्व को तोड़ते हुए प्रत्येक क्षेत्र में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है और निरन्तर आगे बढ़ रही हैं। विमान चालन, व्यापार, खेल, विज्ञान, शिक्षा, सेना इत्यादि सभी स्थानों पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी है किन्तु नारी जिस क्षेत्र में अपना कदम रख रही हैं वह चुनौतियों व कठिनाइयों से भरा पड़ा है।

परम्परागत मध्यम वर्ग से भिन्न अपनी आवश्यकताओं के कारण आज मध्यमवर्गीय स्त्री का नौकरी करना असम्मानजनक नहीं समझती। आर्थिक लाभ की भावना से ही पति–पत्नियों से नौकरी कराना बुरा नहीं समझते। घर के बुजुर्ग भी चाहने लगे हैं कि उनकी बहुएँ परिवार की आमदनी बढ़ाने में योगदान दें। इन आर्थिक कारणों के अतिरिक्त प्रतिभा के सदुपयोग, अपने लिए उच्च दर्जा, आर्थिक स्वावलम्बन, व्यवसाय विशेष के प्रति रुचि जैसे मनोवैज्ञानिक कारणों ने स्त्री स्वावलंबन को संभव बनाया है। किन्तु विवाह के बाद मध्यम वर्गीय पति अपनी माँ की एक निष्ठा सेवा याद कर करके पत्नी में अपराध बोध पैदा करता है कि वह परिवार के दायित्वों का निर्वहन भलीभाँति नहीं कर पा रही है।

इस स्थति में महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार हो रही हैं। आज स्त्रियों को शारीरिक, यौनिक, मानसिक एवं भावनात्मक इत्यादि स्वरुपों में घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ रहा है। शारीरिक प्रताड़ना से अलग मानसिक प्रताड़ना सामने आ रही है। मानसिक प्रताड़ना के कारण महिलाओं में मानसिक रोगों की संख्या तेजी से बढी है। अधिक समय तक यह स्थिति बनी रहने के कारण उच्चरक्तचाप, डिप्रेशन की मरीज बन जाती हैं। मानसिक हिंसा के कारण दहेज, पति का बेरोजगार होना, पत्नी का बेरोजगार होना पति पत्नी में ईगो की समस्या, विवाहेत्तर सम्बन्ध, आर्थिक तंग हालत पुरुष के हाथों आर्थिक ताकत का होना शामिल है।

शिक्षा के क्षेत्र में देखा जाए तो भारतीय शिक्षित मध्यमवर्ग ने नारी की शिक्षा पर ध्यान दिया है। पिता के लिए शायद श्रेष्ठ वर जुटाने में सहयोगी हो रही है– शिक्षा। आजकल पुरुषों के लिए पढ़ी लिखी पत्नी स्टेटस सिम्बल है। आज की लडकियाँ विवाह की अपेक्षा कैरियर को वरीयता दे रही हैं। जहाँ तक विवाह की बात है। यहाँ भी जीवन साथी चुनने में आजादी कम ही है। माता पिता बेटी को ब्याहने के बाद अपनी जिम्मेदारियों की इतिश्री कर लेते हैं। लडकियाँ अपने मायके में ही अनचाही बन जाती है। स्त्री को दान, भीक्षा, रक्षा, दहेज, चिकनी चुपडी बातें नहीं चाहिए। स्त्री को उसका हक जमीन मकान, आजादी और इज्जत चाहिए। उत्तराधिकार में सम्पत्ति नहीं मिलना स्त्री को कमजोर करता है। बेटी को दहेज देकर विदा कर दिया जाता है जो उसके हक में आता ही नहीं।

अधिकांश महिलाएँ अपने हक की बात करती ही नहीं क्योंकि वह मायका नहीं खोना चाहती। पुरुष को यदि पत्नी के परिवार से सम्पत्ति मिलती है वह स्वीकार है परन्तु बहन को देना स्वीकार नहीं है। कानून द्वारा स्त्रियों को अधिकार देने के बाद भी स्त्रियाँ अपना हक प्राप्त नहीं कर पाई हैं।

दहेज प्रथा दिन–प्रतिदिन विकराल रूप लेता जा रहा है। अधिक दहेज देने के बावजूद दामाद पर पुत्री या पिता का अधिकार नहीं होता। न ही अधिक दहेज से स्त्री को ससुराल में सम्मान मिलता है बल्कि दहेज का उद्देश्य बेटी को अपने घर रखने के लिए रिश्वत के तौर पर दिया जाता है। दहेज न मिलने पर दी जाने वाली प्रताड़ना से कोई अपरिचित नहीं है। लगभग प्रतिदिन दहेज के कारण होने वाली हत्याओं की खबरें हमें देखने–सुनने को मिलती हैं। विडम्बना तो यह है कि आज भी नारी के सम्मान को विवाह से जोड़ा जाता है। विवाह से बाहर स्त्री के सम्बंधों में स्त्री के सम्मान पर प्रश्नचिह्न लगता है।

वैश्वीकरण बाजारवाद और संस्कृति के पश्चिमीकरण इस तेज रफ्तार दौर में कई सामाजिक मूल्यों का क्षरण हुआ है। और कई के स्वरुप बदले हैं। पूरानी मान्यताएँ टूट रही है। रूढ़ियों और वर्जनाओं के बन्धन ढीले पड़ रहे हैं। इनकी वाहक है नई पीढ़ी जो मौज मस्ती, सुखों के भौतिक साधन जुटाने के वास्ते जीने के इस बिन्दास अन्दाज में गर्ल फ्रैन्ड या ब्वॉय फ्रैन्ड होना तो जरुरी है परन्तु शादी जरुरी नहीं है। यह पाश्चात्य जीवन पद्धति की देन है। वहाँ इस प्रकार के सम्बन्धों को लिव इन रिलेशनशिप कहा जाता है। हालांकि इसमें परिणाम सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलुओं पर आ रहा है। उचित या अनुचित का भेद व्यक्तिगत सोच पर निर्भर करता है।

समाज के लिए चिन्तनीय स्त्री पुरुष अनुपात में स्त्रियों का कम होना किन्तु इसके बावजूद कन्या भ्रूण हत्या निरन्तर बढ़ रही हैं। भौतिक सुख की उत्तरोत्तर वृद्धि, बढ़ती हुई अभिलाषा ने मनुष्यों को इतना अन्धा बना दिया है कि आज अपने अजन्में शिशु को गर्भपात द्वारा हत्या करता जा रहा है। गर्भपात की संख्या में निरन्तर वृद्धि समाज के लिए गंभीर चुनौती बन गई है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार 1000 पुरुषों के पीछे 933 लड़कियों का अनुपात है। यह अनुपात असन्तुलन शिक्षित व सम्पन्न राज्य पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र में देखने को मिलता है। भौतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से यह गर्भपात मानवता पर कलंक है। इसे रोकने हेतु प्रत्येक महिला एवं पुरुषों को आगे आकर सहयोग देना है।

भारतीय संविधान में स्त्री पुरुषों को समानता का अधिकार प्राप्त होने के बाद भी समाज में बराबरी का अधिकार नहीं मिला है और औरत होने की बात को भूलकर केवल व्यक्ति रहकर बातें करनी होंगी। समानता और बराबरी की बातें करते समय उसे औरत मर्द का भेद भूलना होगा तभी बराबरी का अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। क्या कभी हम सोच पाएंगे कि महिला पुरुषों के बाराबर हैं और उनकी पूरक है? क्या हम उनका आदर करते हैं? क्या हम उनकी भावनाओं का आदर करते है? यदि नहीं तो इसके लिए प्रत्येक पुरुष जिम्मेदार है। उक्त सभी दशाओं में महिलाओं के प्रतिदोषी हैं।

स्त्री परिवार को ही अपना कर्मक्षेत्र मानकर अपनी समस्त रचनात्मक शक्तियों से उसे सजाती, संवारती व व्यवस्थित रखती है। हर छोटे बड़े सदस्य की जरुरतों को पूरा करना अपना कर्तव्य समझती है। स्त्री की सारी दुनिया परिवार में आकर सिमट जाती है किन्तु जब परिवार का यही सुरक्षा कवच, उसके जीवन का केन्द्र बिन्दु उसके लिए सबसे अधिक असुरक्षित और दुःखदायी हो जाए तो स्त्री क्या करे? भारतीय परिवारों की विडम्बना है कि यहाँ कन्या को अभिशाप व पुत्र को वरदान माना जाता है। उनके लालन–पालन में भेदभाव किया जाता है जो समाज के लिए चिन्तनीय है।

महिलाओं के प्रति अपराधों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। इस प्रवृत्ति में बलात्कार की घटनाओं में वृद्धि हुई हैं। घर के अन्दर भी नाते रिश्तेदारों द्वारा उनके साथ छल करके बलात्कार की घटनाएँ देखने को मिलती है। समाज के दृष्टिकोण से देखें तो बलात्कार ही मात्र ऐसा अपराध है जिसमें समाज की दृष्टि से बलात्कार का शिकार स्त्री को दोषी ठहराया जाता है। सामाजिक लांछन, अपमान स्त्री के हिस्से में आता है। सब कुछ लुट जाने का एहसास स्त्री को दिया जाता है। ऐसी दशा में स्त्री को टूटना नहीं चाहिए बल्कि बलात्कारी को सजा दिलवाने के साथ–साथ अपने जीवन को सामान्य रूप से जीना चाहिए। कानून अविवाहित मातृत्व के प्रति पक्षघर के बावजूद सामाजिक संरचना में विवाह संस्था से बाहर मातृत्व कलंक और संघर्ष का कारण बनता है।

भारत ही नहीं विकसित देशों में भी शासन और नीति निर्धारण कम है। विश्व के देशों तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में उच्चस्थान का प्रतिनिधित्व 5 प्रतिशत से भी कम है। भारत में विधानसभा, लोकसभा, राज्यसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है।

इस दशक की सशक्त महिलाएँ जिन पर हमें गर्व है उसमें प्रमुख हैं लारादत्ता, प्रियंका चोपड़ा, मीरानायर, ममता खरब, नैनालाल, किदवई, सोनिया गाँधी, सानिया मिर्जा, इंदिरा, कृष्णमूर्ति नूयी, सुनिता

☞ पृष्ठ 04 का शेष

www.thearyasamaj.org

हे जीव तू सूर्य और चन्द्र के समान निर्भय बन

● डॉ. अशोक आर्य

इस सृष्टि में सूर्य और चंद्रमा दो ऐसी शक्तियाँ हैं, जो कभी किसी से भयभीत नहीं होती। सदैव निर्भय होकर अपने कर्तव्य की पूर्ति में लगी रहती हैं। यह सूर्य और चन्द्र निर्बाध रुप से निरंतर अपने कर्तव्यपथ पर गतिशील रहते हुए समग्र संसार को प्रकाशित करते हैं। इतना ही नहीं ब्राह्मण व क्षत्रिय ने भी कभी किसी के आगे पराजित होना स्वीकार नहीं किया। विजय प्राप्त करने के लिए वह सदा संघर्षशील रहे हैं। जिस प्रकार यह सब कभी पराजित नहीं होते उस प्रकार ही हे प्राणी। तू भी निरंतर अपने कर्तव्यपथ पर बढ़ कभी स्वप्न में भी पराजय का वरण मत कर। इस तथ्य को अथर्ववेद के मन्त्र संख्या 2.15.3,4 में इस प्रकार कहा है:–

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च, न विभीतो न रिष्यतः।

एवा मे प्राण माँविभेः !! अथर्व. 2.15. 3।।

यथा ब्रह्म च क्षत्रं च, न विभीतो न रिष्यतः।

एवा में प्राण माँविभेः !! अथर्व. 2.15. 4।।

यह मन्त्र मानव मात्र को निर्भय रहने की प्रेरणा देता है। मन्त्र कहता है कि हे मानव! तू सदा अपने जीवन में निर्भय हो कर रह। किसी भी परिस्थिति में कभी भयभीत न हो। मन्त्र एतदर्थ उदाहरण देते हुए कहता है कि जिस प्रकार कभी किसी से न डरने के कारण ही सूर्य और चन्द कभी नष्ट नहीं होते, जिस प्रकार ब्रह्म शक्ति तथा क्षात्र शक्ति भी कभी किसी से न डरने के कारण ही कभी नष्ट होने से बचे रहते हैं।

हम डरते हैं, डर क्या है? भयभीत होते हैं, भय क्या है? जब हम मानसिक रुप से किसी समय शंकित हो कर कार्य करते हैं इसे ही भय कहते हैं। स्पष्ट है कि मनोशक्ति का ह्रास ही भय है। किसी प्रकार की निर्बलता, किसी प्रकार की शंका ही भय का कारण होती है, जो हमें कर्तव्य पथ से च्युत कर भयभीत कर देती है।

इससे मनोबल का पतन हो जाता है तथा भयभीत मानव पराजय की और अग्रसर होता है। मनोबल क्यों गिरता है– इसके गिरने का कारण होता पाप, इसके गिरने का कारण होता है अनाचार, इसके गिरने का कारण होता है मानसिक दुर्बलता। जो प्राणी मानसिक रुप से दुर्बल है, वह ही लोभ में फँस कर अनाचार करता है, पाप करता है, अपराध करता है, अपनी ही दृष्टि में गिर जाता है, संसार में सम्मानित कैसे होगा? कभी नहीं हो सकता।

मेरे अपने जीवन में एक अवसर आया मेरे पाँव में चोट लगी थी। इस अवस्था में भी मैं अपने निवास के ऊँचे दरवाजे पर प्रतिदिन अपना स्कूटर लेकर चढ़ जाता था। चढ़ने का मार्ग अच्छा नहीं था। एक दिन स्कूटर चढ़ाते समय मन में आया कि आज मैं न चढ़ पाऊँगा, गिर जाऊँगा। अतः शंकित मन ऊपर जाने का साहस न कर पाया तथा मार्ग से ही लौट आया। पुनः प्रयास किया किन्तु भयभीत मन ने फिर न बढ़ने दिया, तीसरी बार प्रयास कर आगे बढ़ा तो गिर गया। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि जब भी कोई प्रयास भ्रमित अवस्था में किया जाता है तो सफलता नहीं मिलती। इसलिए प्रत्येक कार्य निर्भय मन से करना चाहिए सफलता निश्चय ही मिलेगी। प्रत्येक सफलता का आधार निर्भय ही होता है।

हम जानते हैं कि मनोबल गिरने का कारण दुर्विचार अथवा पापाचरण ही होते हैं। जब हमारे हृदय में पापयुक्त विचार पैदा होते हैं, तब ही तो हम भयभीत होते हैं। जब हम किसी का बुरा करते हैं तब ही तो हमें भय सताने लगता है कि कहीं उसे पता चल गया तो हमारा क्या होगा? इससे स्पष्ट होता है कि छल पाप तथा दोष पूर्ण व्यवहार से मनोबल गिरता है जिससे भय की उत्पति होती है तथा यह भय ही है जो हमारी पराजय का कारण बनता है। जब हम निष्कलंक हो जाएँगे तो हमें किसी प्रकार का भय नहीं सता सकता। जब हम निष्पाप हो जाएँगे तो हमें किसी प्रकार से भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं रहती। जब हम निर्दोष व्यक्ति पर अत्याचार नहीं करते तो हम किस से भयभीत हों ? जब हम किसी का बुरा चाहते ही नहीं तो हम इस बात से भयभीत क्यों हों कि कहीं कोई हमारा बुरा न कर दे, अहित न कर दे। यह सब तो वह व्यक्ति सोच सकता है, जिसने कभी किसी का अच्छा किया ही नहीं, सदा दूसरों के धन पर, दूसरों की सम्पत्ति पर अधिकार करता रहता है। भला व्यक्ति न तो ऐसा सोच सकता है तथा न ही भयभीत हो सकता है।

इसलिए ही मन्त्र में सूर्य और चंद्रमा का उदाहरण दिया है। यह दोनों सर्वदा निर्दोष हैं। इस कारण सूर्य व चंद्रमा को कभी कोई भय नहीं होता। वह यथावत् अपने दैनिक कार्य में व्यस्त रहते हैं, उन्हें कभी कोई बाधा नही आती। इससे यह तथ्य सामने आता है कि निर्दोषता ही निर्भयता का मार्ग है, निर्भयता की चाबी है, कुंजी है। अतः यदि हम चाहते हैं कि हम जीवन पर्यंत निर्भय रहे तो यह आवश्यक है कि हम अपने पापों व अपने दुर्गुणों का त्याग करें। पापों, दुर्गुणों को त्यागने पर ही हमें यह संसार तथा यहाँ के लोग मित्र के समान दिखाई देंगे। जब हमारे मन ही मालिन्य से दूषित होंगे तो भय का वातावरण हमें हमारे मित्रों को भी शत्रु बना देता है , क्योंकि हमें शंका बनी रहती है कि कहीं वह हमारी हानि न कर दें। इसलिए हमें निर्भय बनने के लिए पाप का मार्ग त्यागना होगा और छल का मार्ग त्यागना होगा तथा सत्य पथ को अपनाना होगा, यही सत्य हैं, यही निर्भय होने का मूल मन्त्र है, जिसकी ओर मन्त्र हमें ले जाने का प्रयास कर रहा है।

वेद कहता है कि मित्र व शत्रु, परिचित व अपरिचित, ज्ञात व अज्ञात, प्रत्यक्ष व परोक्ष, सबसे हम निर्भय रहें। इतना ही नहीं सब दिशाओं से भी निर्भय रहें। जब सब ओर से हम निर्भय होंगे तो सारा संसार हमारे लिए मित्र के समान होगा।

अतः संसार को मित्र बनाने के लिए आवश्यक है कि हम सब प्रकार के पापों का आचरण त्यागें तथा सबको मित्रभाव से देखें तो संसार भी हमें मित्र समझने लगेगा। जब संसार के सब लोग हमारे मित्र होंगे तो हमें भय किससे होगा, अर्थात हम निर्भय हो जाएँगे। इस निमित्त वेदादेश का पालन आवश्यक है।

104 शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी 2
गजियाबाद (उ.प्र.) भारत
चलभाष 09718528068

☞ पृष्ठ 03 का शेष

21वीं शताब्दी में नारी...

विलियम्स, कैटरिना कैफ, चन्दा कोचर। इस सभी महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में भारत का नाम रोशन किया है।

लैंगिक असमानता, असुरक्षा के आतंक और कोख के एकाधिकार व व्यापार के मध्य स्त्री की बहुस्तरीय लड़ाई की जटिलता को पहचानती हैं एक ओर यह लड़ाई पुरुष वर्चस्व और पुरुषवादी मानसिकता की है और दूसरी तरफ स्त्री के प्रतिपक्ष में स्त्री ही खड़ी है। जहाँ मूल्य और आदर्श को छाती से लगाए हुए है।

विभिन्न कार्यस्थलों पर महिलाओं के साथ हो रहे मानसिक उत्पीडन, यौन उत्पीडन जैसी समस्याओं को रोकना महिलाओं के लिए चुनौती है। महिलाओं को विपरीत परिस्थतियों में काम करना पड़ता है।

21वीं सदी की महिलाओं को अपने अधिकारों, कर्तव्यों के प्रति और अधिक जागृत होने की जरुरत है। भारत व अन्य पिछड़े हुए देश रूढियों से पूर्णतः मुक्त नहीं हुए है। आज की नारी के सामने घरेलू हिंसा विकट चुनौती बनी हुई है। प्रजनन और स्तनपान के अतिरिक्त कोई भी ऐसा कार्य नहीं जो सिर्फ स्त्री ही कर सकती हो, किन्तु रोजमर्रा के कार्यों में पुरुषों की भागीदारी न्यूनतम है। महानगरों व कामकाजी दम्पत्तियों में बहुत थोड़े पुरुषों ने इस दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाई है।

समानता और बराबरी की बातें करते समय औरत और मर्द का भेद भूलकर ही बराबरी का अधिकार पाया जा सकता है। बालक एवं बालिकाओं के पालन पोषण में भेदभाव को दूर करते हुए कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए महिलाओं के साथ–साथ समाज के सभी सदस्यों को आगे आने की आवश्यकता है। हमें अपने गौरवमयी संस्कृति का अनुसरण करते हुए स्वयं को आत्मनिर्भर बनाना होगा। स्त्री विमर्श का प्रमुख सरोकार स्त्री का अपने पक्ष में खुद लडना और खुद खड़े होना रहा है। जब तक यह लड़ाई अपनी ओर से नहीं लड़ी जाएगी तब तक स्त्री के पक्ष में नहीं जाएगी।

बी 54 सूरजकुण्ड
गोरखपुर 273015

www.thearyasamaj.org

कौन प्रभु उपासना करता है

● यश वर्मा

ओ३म् ईडते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः। हविष्मन्तो अरङकृतः।। ऋग्वेद 1-14-5

इस मन्त्र का अर्थ है कि हे परमेश्वर, अवस्यु, कण्व, वृक्तबर्हिष, हविष्मन्त और अरङकृत तुझको भजते हैं अर्थात् तेरी स्तुति, उपासना करते हैं।

1. अवस्यु कौन है? अवस्यु वह है जो हृदय से अपनी रक्षा चाहता है। रक्षा किससे चाहता है? रक्षा चाहता है पाप-ताप, दुर्गुण, व्यसन, दुख-दर्द, कष्ट क्लेश अपराध, छल-कपट, फरेब, अनाचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, बुराई से। जो सच्चे हृदय से इन सबसे रक्षा चाहता है वह अवस्यु है। परमात्मा पवित्र है तो वह अवस्यु को भी शुद्ध, पवित्र, सरल, निश्छल, स्वच्छ, निर्मल बना देगा। तभी तो हम नित्य प्रति कई बार इस मन्त्र को बोलते हैं:-

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरि तानि परा सुव। यद भद्रं तन्न आ सुव।।

ओ३म् युयोध्यस्मज्जुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।

हे प्रभु हमें अच्छे गुण, कर्म, स्वभाव प्रदान करो और हमारी कुटिलता को दूर कर दो, हमारी बुराई को दूर कर दो।

संस्कृत में अव धातु का अर्थ है गति। जो प्रभु से उत्साह व प्रेरणा पाकर गतिशील अर्थात् एक्टिव हो जाते हैं जैसे महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, आदि और वर्तमान में देखें तो बाबा रामदेव जिन्होंने लाखों करोड़ों लोगों को गतिमान कर दिया, योग के द्वारा। गति-ज्ञान-गमन अर्थात् विशेष ज्ञान जो हृदय को आलोकित करदे, प्रकाशमान कर दे। ऐसे व्यक्ति के कार्य दिव्य हो जाते हैं, आचरण दिव्य हो जाता है, श्रेष्ठ पुरुष बन जाते हैं। ऐसे व्यक्ति का आहार, व्यवहार, विचार, स्वभाव बदल जाते हैं। वह निराला व आला व्यक्ति बनकर उभरता है। वह जो विशेष पाना चाहता है, उपलब्ध करना चाहता है, उसे सब मिल जाता है। धन, संतान, पुत्र पौत्र तो सबके पास हैं। परन्तु ऐसे अवस्यु को अद्वितीय शांति, सुख, पवित्रता, दिव्यता मिलते हैं। जो ये सब चाहता है वह प्रभु की उपासना करता है।

अव का अगला अर्थ है कांति अर्थात् आभा, प्रभा। अग्रेजी में इसे ओरा कहते है। आज कल तो ओरा टैस्ट करने के यन्त्र भी आ गए हैं। जो प्रभु की सच्ची उपासना करता है उतनी उसकी कांति बढ़ती जाती है। प्रभु अग्नि स्वरूप हैं, प्रकाश स्वरूप हैं। जो उसका साधक है, साधना में रत रहता है वह पवित्र, सरल, निश्छल, सौम्य, शांत हो जाता है। उसकी कांति दिन प्रतिदिन बढ़ती जाएगी। अव का अगला अर्थ है प्रीति। इस संसार में प्रीति प्यार, दुलार, स्नेह तो सबको मिलता रहता है लेकिन साधक को प्रभु की प्रीति, स्नेह, प्यार-दुलार मिलने लगता है। जो श्रद्धा-भक्ति से प्रभु की स्तुति, उपासना करता है प्रभु उससे प्रीति करते हैं।

अव का एक अर्थ अवगम भी है अर्थात् जानना। संसार को नहीं बल्कि विशेष रहस्यों को जानना, जिन्हें जानने से व्यक्ति के संशय मिट जाते हैं। उपनिषदों के ऋषि, दर्शन शास्त्रों के ऋषि, वेदों के सही अर्थ करने वाले ऋषियों ने न जाने कितने गूढ़ रहस्य जाने होंगे, जन्म मृत्यु, आत्मा-परमात्मा के विषय में, कर्मगति, परम गति के बारे में, बन्धन मोक्ष के बारे में। ऐसे ऋषि अवस्यु ही तो थे जो हमारा मार्ग दर्शन करते रहे हैं। हम लोगों के लिए अध्यात्म का राह दिखा गए हैं।

अव का एक अर्थ है स्वाम्यर्थ अर्थात् स्वामित्व। क्या जो दुनिया पर स्वामित्व चाहते हैं वे अवस्यु हैं, नहीं। जो अपने ऊपर स्वामित्व चाहते है, अपने शरीर, मन, इन्द्रियों पर अधिकार, नियन्त्रण चाहते हैं। हमारा कान कुछ भी सुनवा देता है, आँख कुछ भी दिखा देती है, नाक कुछ भी सुँघवा देता है, मन तो जागते हुए भी और सोते हुए भी हमारे वश में नहीं आता। हमारा मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ हमसे कुछ भी करवा लेती हैं। परन्तु जो अपने ऊपर अधिकार, नियन्त्रण, स्वामित्व चाहते है, वे उस परमपिता परमेश्वर को भजते हैं व अपने स्वामी स्वयं बनते हैं।

अव का एक अर्थ है याचना अर्थात् माँगना। जिनको धन, अन्न, वस्त्र, अर्थात् सांसारिक पदार्थों की आवश्यकता है परन्तु किसी से मांगना नहीं चाहते, वे प्रभु की स्तुति, उपासना करते हैं। तभी तो सन्ध्या के प्रथम मन्त्र **"ओ३म् शन्नो देवी रमिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः"** में प्रभु से मनोवांछित व पूर्णानन्द की कामना की गई है। प्रभु मनोवांछित तो देते ही हैं और सच्चे हृदय से सकल्प करके, पूर्ण पुरुषार्थ किया जाए तो पूर्णानन्द भी प्रदान करते हैं।

अव का अगला अर्थ है इच्छा अर्थात् इच्छा विशेष। इच्छा विशेष की पूर्ति के लिए उपासना करते हैं। हमारी मलिनता उस अग्निरूप प्रभु में पड़कर कुन्दन बन जाती है। प्रभु की विशेष अनुकम्पा होती है। मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन जाते हैं। अमीचन्द जैसा व्यक्ति हीरा बनकर एक कवि बन जाता है।

अव का एक अर्थ है दीप्ति अर्थात् प्रकाश। जो जीवन में सच्चा प्रकाश अर्थात् ज्ञान चाहते हैं, प्रभु उनके हृदयगत तक को मिटाकर प्रकाश कर देता है। इन्द्रिय रूप गवाक्षों खिड़कियों छिद्रों से प्रकाश बाहर भी देदीप्यमान हो जाएगा।

अव का एक अर्थ है प्राप्ति। जो हमें मानव रूप में प्रभु से प्राप्ति हुई है जैसे यह शरीर, इसका एक-एक अंग सिर, नाक, कान, आँख, हाथ, पैर, दाँत, लीवर, किडनी, हृदय, मन बुद्धि, स्मरण शक्ति, नस, नाड़ी तंत्र आदि। प्रभु से जो हमें इस रूप में प्राप्ति हुई है इसे देखकर इसे अनुभव कर निहाल हो जाता है। फिर मानव कह उठता है कि हे प्रभो, आप कितने महान हो और बार-बार उसका धन्यवाद करते हुए उसकी उपासना करता है।

अव का एक अर्थ है आलिंगन। जो प्रभु का आलिंगन करना चाहते हैं वे प्रभु को भजते हैं कि शायद प्रभु कभी हमें अपने आलिंगन में ले लेगा। अपनी गोद में लेकर परम पद तक पहुँचा देगा।

अव का एक अर्थ है हिंसा। हिंसा किसी पशु या व्यक्ति की नही करनी है बल्कि अच्छे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए साधक को हिंसा करनी है अति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, राग, द्वेष रूपी शत्रुओं की। ऐसे साधक प्रभु की उपासना करते हैं

अव का एक अर्थ है वृद्धि। जो हृदय से अपनी वृद्धि अर्थात् उन्नति चाहता है वह प्रभु को भजते हैं। ईमानदारी से, धर्मपूर्वक पूर्ण पुरुषार्थ के पश्चात् जो मिले उसे प्रसन्नता पूर्वक अहोभाग्य मानकर संतुष्ट रहते हुए प्रभु की स्तुति करते हैं।

इस प्रकार जो चाहते हैं अपने जीवन में गति-कांतिप्रीति-तृप्ति-अवगम-स्वामित्व-याचना-इच्छा-दप्ति-अवाप्ति-आलिंगन-हिंसा-वृद्धि, वे सब परमपिता परमेश्वर की स्तुति। प्रार्थना/उपासना करते हैं। प्रभु को दिल से भजते हैं। वे सब अवस्यु हैं।

2. ऋग्वेद के इस मन्त्र में दूसरा शब्द आया है "कण्वासो"। कण्व का अर्थ है मेधावी, बुद्धिमान, अकलमंद। प्रायः हम लोग प्रकृति की अर्थात् संसार की, धन वैभव की उपासना करते हैं। यह बालबुद्धि के समान है, जैसे बच्चा खिलौने देखकर उनमें मस्त हो जाता है और माँ को भूल जाता है। ऐसे लोग इसी लोक को मानते हैं व बार-बार ही भूल जाता है। ऐसे लोग इसी लोक को मानते हैं व बार-बार मृत्यु पाश में आते रहते हैं। कठोपनिषद् का ऋषि कहता है कि प्रभु का ज्ञान लोगों को सुनने को नहीं मिलता अर्थात् केवल कानों से सुनने का भाव नहीं है यहाँ पर। सुनने का भाव है कि हम प्रभु के ज्ञान को हृदयंगम नहीं कर पाते। हम लक्ष्मी के भक्त बने रहते हैं और नारायण से दूर रहते हैं। जो कण्वास है अर्थात् बुद्धिमान है वह प्रभु के ज्ञान को हृदयंगम कर लेता है और सच्चा ज्ञान उतना ही है जितना हमारे आचरण में आ जाता है। शेष तो शाब्दिक ज्ञान बनकर रह जाता है। बुद्धिमान, मेधावी लोग प्रभु को भजते हैं वही कण्वास है। वही अपना मानव जीवन सफल कर पाते हैं।

3. इस मन्त्र का तीसरा शब्द है "वृक्तबर्हिष"। इसका अभिप्राय है जो ऋत्विज है अर्थात् ऋतु-ऋतु में यज्ञ करने वाले हैं, आसन लगाने वाले हैं। श्रद्धा व प्रेम से घी, सामग्री, सुमिधा व मात से मन्त्रोच्चारण करते हुए यज्ञ, हवन करते हैं। ऐसे लोग पृथ्वीलोक से यानि भोग विलासों से ऊपर उठकर अन्तरिक्ष लोक अर्थात् सत्संग, स्वाध्याय की ओर बढ़ते हैं। फिर धीरे-धीरे संयम, धारणा, ध्यान, समाधि के द्वारा ऐसे लोग द्यौलोक को प्राप्त कर लेते हैं। वे अपनी वासनाओं की उखाड़ फेंकते हैं। प्रभु ध्यान में डूबे रहते हैं। मन प्रभु के सिवा कहीं और लगता ही नहीं। शांति और आनन्द को प्राप्त कर लेते हैं।

4. इस मन्त्र का चौथा शब्द है "हविष्मन्तः" जिसका अभिप्राय है कि जो सदा अपने हाथों में हवियाँ रखते हैं। ऐसे व्यक्ति सदैव अपने झोले में अन्न, खाद्य पदार्थ, दूध, फल, वस्त्र, कम्बल, शाल, धन, ज्ञान-विज्ञान आदि पदार्थ रखते हैं ताकि जहाँ कहीं जरुरतमंद, साधु, संन्यासी, विद्वान्, विद्यार्थी मिले, उनको श्रद्धा व प्रेम से दिया जा सके। जो दूसरों को देकर खाता, पीता, पहनता है, वह वह हविष्मन्तः है। जिसका सादा जीवन है और उच्च विचार है, प्रभु के प्रति आत्मसमर्पण की भावना है, अतिथि यज्ञ करता है, माता-पिता की सेवा सुश्रुषा करता है, ऐसा व्यक्ति प्रभु की उपासना करता है। श्रद्धा सेवा प्रेम से किया हुआ दान व सेवा सदैव अधिक फलदायी व आशीर्वाद से भरपूर होता है यद्यपि बिना श्रद्धा के दान व सेवा भी कुछ फलदायी तो अवश्य है।

5. इस मन्त्र का अन्तिम शब्द है "अरङकृत" अर्थात् अलंकृत। जो अपने आपको अलंकृत करना चाहते हैं। क्या हमें अपने को वस्त्रों व आभूषणों से अलंकृत करना है, नहीं। मानव जीवन मिला है तो अपने को अलंकृत करो यज्ञ आदि शुभ कर्मो से, शास्त्रों के श्रवण मनन से, अध्यात्म की राह पकड़ कर श्रेयमार्ग पर चलने से, परोपकार, दान, पुण्य, सत्कर्म, निष्काम कर्म करके। अलंकृत वह होता है

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द सरस्वती

● सत्यपाल आर्य

स्वामी दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के महानतम समाज सुधारक धर्म–संस्थापक और राजनैतिक चेतना के अग्रदूत थे। उन्नीसवीं शती के अन्त में जब उन्होंने मानव संस्कार संशोधन एंव मानव निर्माण के सत्कार्य को अपने हाथ में लिया, उस समय हिन्दुत्व अपनी गौरव गरिमा एवं अस्मिता खो चुका था। समाज हर प्रकार की बुराइयों के गहरे कुएँ में गिर चुका था। देश राजनैतिक दासता की भयंकर बेड़ियों में जकड़ा जा चुका था। आर्यों के प्राचीन गौरव, उत्साह, उमंग, आगे बढने की इच्छा व संघर्ष की भावना का स्थान आलस्य, प्रमाद, स्वार्थ, अविद्या, भाग्यवाद, अकर्मण्यता, आपसी फूट, मानसिक आत्मिक, आर्थिक व राजनैतिक दासता ले चुकी थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यजाति को झकझोर कर जगाया। प्राचीन गौरवशाली परम्परा, इतिहास, विरासत और ज्ञान–विज्ञान का स्मरण कराया। स्वामी जी ने मुमूर्षु आर्यजाति में नवचेतना, नवप्राण, नवआशा, नवउत्साह और नवऊर्जा का संचार किया।

निःसन्देह हो स्वामी दयानन्द सरस्वती जाति के नवजीवन प्रवर्त्तन मणिमाला में भगवान राम, कृष्ण, गौतम, कपिल, कणाद, जैमिनी, पतञ्जलि आदि के समान आभावान मोती थे। वर्तमान युग के महामनीषि चाणक्य, समर्थ गुरु रामदास, गुरू गोविन्द सिंह, राणा प्रताप और वीर शिवाजी के सदृश धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तथा राजनैतिक पुनर्जागरण के उन्नायक शलाका पुरुषों में स्वामी दयानन्द सरस्वती की गणना उच्चतम शिखर पर होती है।

स्वामी सत्यानन्द ने स्वामी दयानन्द सरस्वती की महिमा, और उपकारों का बड़े ह्रदयग्राही शब्दचित्रण किया है। ''ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में जन्म लेकर जिन जिन महापुरूषों ने भारतीय राष्ट्र, धर्म, समाज, संस्कृति की अपूर्व सेवा की है उनमें दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती के परम शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम अनन्यतम है।''

''स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824–83) उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रारम्भ हुए भारतीय पुनर्जागरण युग के महान युग निर्माताओं में से एक हैं। वे केवल एक सुधारक मात्र ही नहीं थे जिन्होंने भारतीय समाज व धर्म सुधार का एक प्रबल आन्दोलन आरम्भ किया वरन् वे एक प्रगतिवादी चिन्तक, दार्शनिक व मनीषी थे।

''स्वामी जी महाराज पहले महापुरुष थे जो पश्चिमी देशों के मनुष्यों के भी गुरु कहलाए, जिनको अनेक पश्चिमी मनुष्य गुरु, आचार्य और धर्मपिता मानते थे।''

अनेक वर्ष पहले से आज तक ऐसा एक ही पुरुष हुआ है जो विदेशी भाषा नहीं जानता था, जिसने स्वदेश से बाहर एक पैर भी नहीं रखा था, जो स्वदेश के अन्न जल से पला था, जो विचारों से स्वदेशी था, जो आचारों से स्वदेशी था, भाषा और वेश में स्वदेशी था, किन्तु वीतराग और परम विद्वान् होने से सबका भक्ति भाजन बना हुआ था, जिसका देशी, विदेशी सभी मान करते थे। ऊँचे से ऊँचे राजे–महाराजे जिसका सम्मान करते थे, वह महापुरुष महर्षि दयानन्द ही था।

''स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन का मुख्य कार्य धर्म प्रचार था। वे आर्यों के धर्म को सर्वोत्तम, सबसे पुरातन और ईश्वर प्रदत्त मानते थे। आत्मज्ञान आर्य धर्म की प्रधानता का सूचक है। आत्मज्ञान से आर्यों का पहले भी उत्कर्ष हुआ है। इस तत्व के पाठ इन्होंने सब जातियों को पढ़ाए हैं। इसमें ये सारे संसार के शिक्षक रहे हैं और अब भी हैं।''

इस आत्मज्ञान का मूल स्रोत ईश्वर प्रदत्त वेद है। वेद से ही इस तात्विक ज्ञान का निःसरण हुआ है। इसीलिए श्री स्वामी जी की वेद में अपार भक्ति थी। वे पक्के वेदानुयायी थे। वेद विश्वास वेद की अपौरुषेयता को स्थगित कर वे किसी से कभी भी सन्धि करने को उद्यत न थे।'

महाराज का परमात्मदेव में विश्वास था। वे ईश्वर तत्त्व पर पूरा भरोसा रखते थे। उसी जगदीश की शान्तशरण में रहते हुए वे विपत्ति वज्रपात से भी घबराते नहीं थे। महाराज वेद विश्वास की भान्ति ईश्वर विश्वास के भी पक्के थे। वेदाज्ञा और एक निराकार ईश्वर भक्ति, धर्म के ये दो अंग सार्वजनिक थे। इसी केन्द्र पर सारी जातियों को लाने के लिए आजीवन सचेष्ट रहे।

वे प्राचीनता की दुर्गा के अनन्य प्रेम से पक्के पूजक थे। आर्यों का अतीत काल, उनको स्वर्णिम आचारों और स्वर्णिम विचारों से समावृत, स्वर्ण स्वरुप प्रतीत होता था। आर्यों की पुरानी सभ्यता की अवहेलना वे कदापि सहन नहीं कर सकते थे। उनका निश्चय था कि नवीन मतों, महन्तों और मठों ने पुरातन काल की महता पर मिट्टी डाल दी है।

महाराज सार्वजनिक हित के लिए ही हाथ में तर्क का तीर लेकर खण्डन के भूखण्ड में उतरे थे। रोगी के फोड़े फुन्सियों का जब तक छेदन न किया जाये, उसका स्वस्थ होना दुष्कर है। खेत में जब तक झाड झंखाड उखाड़ कर, घासफूस निकाल कर इसका शोधन न किया जाए उसमें खेती का सुफलित होना असम्भव है। ऐसे ही किसी देश और जाति में से जब तक कुरीतियों को दूर न किया जाए और उसके आचार विचार का संशोधन न हो, तब तक उसकी उन्नति के सोपान का पदार्पण करना महा कठिन है। सुधार का कार्य सर्वप्रिय तो नहीं, परन्तु सार्वजनिक हित से पूर्ण अवश्य हुआ करता है।

खण्डन खड्ग का अवलम्बन करते समय श्री महाराज के महान् ह्रदय में परहित ही रहा था।

स्वामी जी महाराज ने सामाजिक सुधार में ब्रह्मचर्य पालन करना अत्यावश्यक बताया है। एक–एक, दो–दो वर्ष के बालकों का विवाह करना देश का अधःपतन बताया है।

उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था को गुण कर्म के अनुसार माना है। स्वामी जी किसी जाति के जन का उत्तम तथा निकृष्ट होना जन्म और नाम से नहीं मानते थे।

महाराज शूद्रों के सुधार के बड़े पक्षपाती थे। उन्हे भी सृजनकर्ता की सर्वश्रेष्ठ कृति समझते थे। चतुर्थ वर्ण से घृणा करना, उसे अस्पृश्य समझना, उनके निकट मनुष्य पदवी से गिरा हुआ है। जो लोग कुत्तों की छूते हैं, बिल्लियों से खेलते हैं, भैंसों को हाथ लगाते है, ऊंटों को स्पर्श करते हैं, घृणित से घृणित जीव जन्तुओं को भी छू लेते हैं और अपने हाथ से पशुओं के चमड़े का बना जूता पहन व उतार लेते हैं, वे मनुष्यों को अछूत समझें, उससे दूर भागा करें, यह कितना अन्याय है, अधर्म है। महाराज शूद्रों को वेदाधिकार देते हुए लिखते हैं, जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि सब पदार्थ सबके लिए बनाए हैं, वैसे ही वेद भी सब मनुष्यों के लिए प्रकाशित किए हैं।''

श्री स्वामीजी ने स्त्री जाति के सुधार का भी परम कार्य किया है। शास्त्र रीति से उसको भी वेदाधिकार दिया है। महाराज स्त्री शिक्षा एवं स्त्रियों का महत्त्व वर्णन करते हुए लिखते है,

'' स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य धारण और विद्या ग्रहण अवश्य करना चाहिए। भारत की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि देवियाँ शास्त्रों को पढ़कर पूरी विदुषी हुई हैं। देखो, आर्यवर्त में राजपुरुषों की स्त्रियाँ, धनुर्वेद, युद्धविद्या अच्छे प्रकार जानती थी। यदि ऐसा न होता तो कैकैयी आदि स्त्रियाँ दशरथादि राजाओं के साथ संग्राम में कैसे जा सकती थीं? स्त्रियों को व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित और शिल्पविद्या अवश्य सीखनी चाहिए।''

श्री स्वामीजी महाराज से भारतवासियों की दरिद्र दशा छिपी नहीं थी। उन्होंने अपने विस्तृत पर्यटन में अकाल पीड़ित देशवासियों की करूणाजनक अवस्था को अपनी आँखों से देखा था, उनके ह्रदय बेधक रोदन व करुण–क्रन्दन को अपने कानों से सुना था। श्री स्वामी जी यह भी मानते और जानते थे कि भारत भूमि रत्नगर्भा है, सुजला है, सुफला है। ऊसर नहीं किन्तु उर्वरा और शस्यशालिनी है।

फिर भी यहाँ भूख, दुर्भिक्ष और अभाव क्यों है? इसका कारण शिल्पकला का भारी अभाव है। विदेशी वस्तुओं की भरमार से यहाँ के लाखों परिश्रमी निकम्मे व बेरोजगार हो रहे है। उनके जीवन के अन्तिम वर्षों में उनके धर्म प्रचार और समाज सुधार आदि उदात्त उद्देश्यों से भारतवर्ष में शिल्पकला का विस्तार करना भी सम्मिलित हो गया था। स्वामी जी जहाँ देशवासियों की आत्मिक भूख प्यास को वेदोपदेश द्वारा दूर करते थे वहाँ उनकी शारीरिक, क्षुत्पिपासा को उपशम करने के लिए शिल्पकला का सुदृढ़ सूत्रपात भी कर रहे थे।

स्वामी दयानन्द ने शिक्षा सुधार पर अधिक बल दिया है। वे जानते थे कि जब तक सर्वसाधारण में सुशिक्षा का प्रचार नहीं होता तब तक उन्नति नहीं हो सकती। करोड़ों मनुष्यों को एक उद्देश्य पर लाने के लिए शिक्षा सबसे ऊँचा साधन है। वह शिक्षा भी धर्मसहित और जातीय होनी चाहिए। ऐसे समय में जबकि मैकाले की शिक्षानीति की बदौलत भारत का युवक पढ़ लिख कर देश धर्म संस्कृति से कटता जा रहा था, स्वधर्म को हेय मानकर तिलाञ्जलि देकर ईसाईयत के जाल में फँसता जा रहा था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में दूसरा तथा तीसरा सम्मुलास पूरे के पूरे शिक्षा नीति को समर्पित किया है। उनके व्याख्यान, लेख, वेदभाष्य आदि समस्त ग्रन्थ शिक्षानीति से अछूते नहीं हैं।

सबके लिए समान अवसर, समान सुविधा, समान व्यवस्था की वकालत की।

स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन जाति–पाति, छुआ–छुत और अमीर–गरीब के बीच की खाई की सम्भावना को ही जड़मूल से नष्ट कर देता है।

स्वामी दयानन्द ने बालश्रम, बालविवाह, अनमेल विवाह, बन्धुआ वृत्ति, अशिक्षा, जाति–पाति, छुआ–छुत आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का रास्ता दिखाया गइ है।

स्वामी दयानन्द सह–शिक्षा के परमविरोधी थे। वे स्वयंवर विवाह के पक्षपाती थे। वर्णव्यवस्था लागू करके उन्होंने श्रम और सम्पत्ति के अधिकारों की क्रान्तिकारी व्यवस्था प्रदान की है।

स्वामी जी के कृतित्व और विचारों से न केवल भारतीय जनमानस ही प्रभावित हुआ अपितु विश्व के अन्य विचारशील लोग भी उनकी वैचारिक गत्यात्मकता, क्रान्तिकारी कार्यक्रम, तथा समय से आगे बढ़कर सोचने की प्रवृति से अप्रभावित नहीं रह सके।

कालान्तर में उनके कालजयी उपदेशों और शिक्षाओं का जैसा प्रचार तथा प्रसार हुआ, उनके विचारों तथा मन्तव्यों को मानने वालों की संख्या समस्त भूमण्डल पर जिस

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

www.thearyasamaj.org

चक्रवर्ती आर्य राज्य ही सर्वश्रेष्ठ

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

आज के युग में चक्रवर्ती राज्य की विचारधारा अवश्य ही आश्चर्यजनक प्रतीत होगी परन्तु आज की जो स्थिति है वह श्रेष्ठ समाज को व्यथित कर रही है। चारों ओर व्यक्ति, घर, परिवार व समाज आज चिन्ताजनक स्थिति में है। भ्रष्टाचार व अपराधों की बढ़ती स्थिति और अत्यधिक भयावह होती जा रही है और यह विषय वहाँ और अधिक विकराल हो जाता है जब जघन्य अपराधों में उच्च अधिकारी एवं जन प्रतिनिधि लिप्त पाए जाते हैं। ऐसी स्थिति में जब रक्षक ही भक्षक हों तो प्रजा का क्या होगा।

प्रजातंत्र, राजतन्त्र सभी तन्त्रों की ओर देखें तो चक्रवर्ती राज्य से उत्तम कुछ भी नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने चक्रवर्ती राज्य की ही प्रशंसा की है। सत्यार्थ प्रकाश में वर्णन किया है "स्वायम्भव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गए क्योंकि इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता। यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं"।

स. प्र. एका. समु.

चक्रवर्ती सार्वभौम शासन जहाँ सब कुछ वेदानुसार ही होता है। जैसा भारत में प्राचीन काल में था। महाभारत युद्ध के समय तक पृथ्वी पर आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा इसका अर्थ यह नहीं कि पूरी पृथ्वी पर एक ही राज्य था। उस समय अन्य पृथक राज्य भी थे परन्तु वे पूरी तरह से स्वतन्त्र न होकर चक्रवर्ती सार्वभौम सम्राटों के अधीन होते थे। उनकी स्थिति माण्डलिक राजाओं जैसी होती थी। युधिष्ठिर पाण्डव चक्रवर्ती सार्वभौम सम्राट था। चीन का राजा भगदत्त अमेरिका का वब्रुवाहन, ईरान का शल्य, यूरोप व यूनान के राजा उसकी अधीनता स्वीकार करते थे। राजसूय यज्ञ में दूर–दूर के राजा सम्मिलित हुए थे।

अब यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि चक्रवर्ती सार्वभौम सम्राट वही होते थे जो आर्यधर्म का पालन करते थे। आर्यधर्म वही था जो वेदानुसार था। राजा, सेनापति, अमात्य व सेना और प्रजा में विद्वान् सब वेदों की शिक्षा प्राप्त होते थे। सत्याचरण जैसे सत्य बोलना धर्म पर चलना जो मन में हो वही वाणी में ऐसा आचरण करते थे व सत्याचरण के लिए प्राणों की बाजी लगा देते थे। सत्य के लिए मृत्यु को भी गले लगा लेते थे महाराजा हरिश्चन्द्र, रघु, दिलीप, दशरथ, राम को कौन नहीं जानता। उस समय उक्ति प्रचलित थी कि **'प्राण जाए पर वचन न जाए'** अर्थात् जो बोलते थे वेदानुसार सत्य व न्यायोक्त ही होता था। आर्यों का उद्देश्य ही संसार का उपकार करना होता था जैसा कि आर्यसमाज के छठे नियम में है।

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।' पूरी पृथ्वी को हर प्रकार से सुखी देखने का उद्देश्य केवल आर्य समाज की ही भावना है और इसीलिए आर्य समाज ने वैदिक व्यवस्था को श्रेष्ठमाना है। जातिवाद, ऊँच, नीच, छुआछूत व पूर्व, पश्चिमवाद, अंधविश्वास व पाखण्डों को अलग कर आर्य समाज मनुष्य मात्र के लिए सार्वभौमिक श्रेष्ठता की भावना लिए हुए है जिससे संसार की यह सुन्दर वाटिका हँसती–खेलती, फलती–फूलती रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने भी किसी एक मत, जाति, भूगोल व सम्प्रदाय के लिए कार्य नहीं किया अपितु उन्होंने पक्षपात रहित सत्य व न्यायोक्त बात संसार के लोगों के हितार्थ ही कही। जहाँ भी उन्होंने दोष, असत्य व अंधविश्वास और पाखण्ड देखे, चाहे वह किसी भी मत में क्यों न हों स्पष्ट वर्णन किया। असत्य का खण्डन किया उनका प्रयोजन संसार के श्रेष्ठ निर्माण से था।

चक्रवर्ती राज्य भी संसार के श्रेष्ठ निर्माण से सम्बन्धित विषय है। प्राचीन समय में दीर्घ समय तक भारतीय चक्रवर्ती शासक धार्मिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में विश्व का नेतृत्व करते रहे हैं। यह सब उनके आदर्श वेदाचारी होने के कारण ही थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का यही विचार था कि भारतीय पुनः चक्रवर्ती राज्य की स्थापना कर विश्व का नेतृत्व करें और यह तभी सम्भव होगा जब हम आर्यत्व का भारतीय जन–जन के जीवन में समावेश कर देंगे और वेद ज्ञान के कारण जगत का उपकार करने वाला प्रकाश यहाँ से उत्पन्न होगा। **'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्'** की विचारधारा का सत्यरूप में समावेश हमारे हृदयों में होगा तो विश्व पुनः भारत की ओर नत मस्तक हो भारत के पीछे चलेगा। आर्य समाजों की स्थापना का उद्देश्य यही था जिससे संसार श्रेष्ठ बने।

आज की स्थिति चाहे धर्म के क्षेत्र में हो या राजनीति व सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में हो अत्यधिक विकृत होती जा रही है। आज चुनाव होते हैं, जन प्रतिनिधि चुने जाते हैं परन्तु चुने जाने पर वह प्रजा के दुखों को भूल जाते हैं। जनता की ओर मुड़ कर भी नहीं देखते। गरीबी, बेरोजगारी, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, अनाचार दिन प्रतिदिन जघन्य हत्याकाण्ड बढते ही जा रहे हैं प्रत्येक के सामने समस्याओं का ढेर लगा है आज जनता दुखी है कब कहाँ क्या घटना हो जाय पता नहीं। शारीरिक रूप से शायद ही कोई स्वस्थ होगा एक तो प्रदूषण ऊपर से खाद्य पदार्थों में मिलावट। पोलिथिन आदि का बढ़ता प्रयोग चारों ओर रोगों को बढ़ा रहा है। कोई ध्यान नहीं देता। उधर रक्षक ही भक्षक हो रहे हैं। छोटे–बड़े नेता हों या अधिकारी, अधिकतर रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। उनकी छानबीन के लिए ऊपर उच्च अधिकारी लगाए जाए तो वहाँ भी रिश्वतखोर भ्रष्टाचारी पकड़े जाते हैं। यह भ्रष्टाचार तभी रुकेगा जब राजा व प्रजा वेद का अध्ययन करेंगे, सत्याचरण करेंगे, आर्यधर्म का पालन करेंगे। और आर्यधर्म तभी सम्भव है जब विद्यालयों में वैदिक विद्वानों द्वारा वेद की शिक्षा गुरुकुल पद्धति के अनुसार दी जाए जैसा कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय व अन्य गुरुकुल दे रहे हैं।

आधुनिक शिक्षा भौतिक ज्ञान वाली है हमने पारमाणविकी में अत्यधिक विकास कर लिया है। चन्द्रमा पर पैर भी रख लिए हैं। मंगल व अन्य ग्रहों पर जाने की तैयारी है। विश्व की कोई भी घटना क्षणों में घर में बैठे देख लेते हैं परन्तु आज हम आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत पीछे व शून्यप्राय हैं। हमारे अन्दर संसार के उपकार की भावना के स्थान पर आंतक वादी जैसी संसार को नष्ट करने वाली कुत्सित भावनाएँ हैं। संसार यहूदी, इसाई, पारसी, क्रिश्चियन, जैन, बौध, हिन्दू व अन्य मत सम्प्रदायों में बँट गया है। आर्यो की भावना 'मनुर्भव' की कहीं दिखाई नहीं देती। विकसित देश सत्य व न्याय से परे दुनियाँ को परमाणु बम के ढेर पर देखना चाहते हैं और एक दूसरे की ओर टेढ़ी आँखों से देखते हैं। कुछ देश हैं जिन्होंने आंतकवाद के सफाये हेतु कार्य भी किया है आंतकवादियों को मारा भी है परन्तु कुछ मसूद अजहर जैसों को आंतकी कहने में भी संकोच करते हैं। ऐसे में विश्व कैसे श्रेष्ठ बन सकता है। आंतकवाद आज विश्व के लिए समस्या बना हुआ है।

भारत में जब आर्यधर्म था, यहाँ चक्रवर्ती राज्य था। सार्वभौम चक्रवर्ती राजा थे सर्वत्र सुख व शान्ति थी। समाज चिन्ता व भय से रहित था परन्तु जैसा राजा होता है वैसी प्रजा वाली कहावत है आज जनप्रतिनिधि अनेक स्थानों पर ऐसे हैं जो अपराध की दुनियाँ से निकल कर राजनीति में आते हैं और अपराधियों से घिरे रहते हैं। अपराध को बढ़ावा देते रहते हैं। परन्तु समाज की उन्नति, शिक्षा की उन्नति की ओर ध्यान नहीं देते। गरीब जनता के घर नहीं जाते। दीन दुखियों की नहीं सुनते। जातिवाद व पक्षपात में ध्यान देते हैं। इससे देश व समाज का विकास नहीं होता। आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रसार व प्रचार के केन्द्र मैकाले की शिक्षा के पोषक आधुनिक कहे जाने वाले शिक्षण संस्थान पाश्चात्य संस्कृति का खूब प्रचार कर रहे हैं। उधर ध्यान नहीं दिया जाता ऐसे जन प्रतिनिधियों से जनता को क्या लाभ मिल सकता है। जहाँ जनप्रतिनिधि मस्त हों और जनता त्रस्त हो वहाँ विकास कैसे सम्भव हो सकेगा।

चाणक्य महान विद्वान् थे तक्षशिला में आचार्य ने तीन चक्रवर्ती सम्राटों को बनाया और अकेल ने ही अपनी शिक्षा व नीतियों द्वारा सम्राटों को विश्व विजयी बनाया।

महात्मा विदुर कुशल नीतिज्ञ थे। उधर श्री कृष्ण वेद के विद्वान् थे। योगी ने अपनी नीति से पांडवों के सत्य पक्ष की ओर रहकर विजय दिलायी। उस समय अमात्य व मंत्री वेदों के विद्वान् होते थे। मृत्यु से कभी न डरते थे। राजा यदि दोषी हो तो उसे वहीं वाक् प्रहार द्वारा सचेत करते थे। राजा विद्वानों का सम्मान करता था। इसीलिए एक मंत्री होता था जो वेदों का प्रकाण्ड पंडित व आचरण को महत्त्व देता था। ऐसे विद्वानों के रहते ही चारों ओर राजा की उन्नति होती थी। आज सैकड़ों मंत्रियों के होते हुए भी चारों ओर हत्या, अपराध, बलात्कार हो रहे हैं। चिन्ता व भय चारों ओर व्याप्त हैं। समाज दुखी है। घर से बाहर जाना भयावह हो गया है।

आज आवश्यकता है कि आजादी के इतने वर्षों बाद हम अपनी उस शिक्षा पर ध्यान दें जिससे चक्रवर्ती सम्राट बनते थे। समाज प्रसन्न व उन्नतिशील होता था। वह शिक्षा है वैदिक शिक्षा।

चन्द्रलोक कालोनी
खुर्जा बुलन्दशहर

www.thearyasamaj.org

स्वर्ग कामो यजेत

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

स्वर्ग कामो यजेत अर्थात जिसको स्वर्ग की कामना हो वह यज्ञ करे। इस मंत्र में आदेश स्पष्ट है और हम सभी मनुष्यों को मिल कर एक साथ यज्ञ कर्म स्वर्ग अर्थात सुख विशेष की कामना से करना चाहिए। यहाँ यज्ञ कर्म को स्वर्ग अर्थात सुख विशेष की प्राप्ति का साधान बताया गया। इसे पूरी तरह से समझने के लिए हमें यज्ञ और स्वर्ग दोनों शब्दों के विस्तृत यौगिक अर्थों को उनके सही स्वरूप और परिप्रेक्ष्य में समझना होगा। साथ ही इन दोनों शब्दों यज्ञ और स्वर्ग के बारे में फैली भ्रान्तियों को भी दूर करना होगा। तभी हम स्वर्ग कामो यजेत के आदेश को यथावत जानकर मानते हुए पालन कर पायेंगे।

प्रथम यज्ञ को समझने का प्रयास करते हैं। यज्ञ को मनुष्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ कर्म **यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म** बतलाया गया साथ ही **यज्ञो वै भुवनस्य नाभि** कहकर इस समस्त संसार का आधार माना गया। परमपिता परमेश्वर को भी 'यज्ञरुप प्रभो हमारे' कहा गया। इनसे स्पष्ट है कि यज्ञ एक बहुत महान पुनीत श्रेष्ठतम कर्म है। परन्तु प्रश्न वहीं रह जाता है कि आखिर इतना महान कार्य यज्ञ क्या है? क्या केवल अग्निहोत्र ही यज्ञ है या अग्निहोत्र उस जीवन यज्ञ का प्रारम्भ है? क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्योद्देश्य रत्नमाला में यज्ञ को परिभाषित करते हुए इसकी यौगिक परिभाषा बतलाई है **''अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त जो भी शिल्प व्यवहार वा पदार्थ विज्ञान है और जो दूसरों के उपकार के लिए किया जाता है उसे यज्ञ कहते हैं''** इस परिभाषा पर चिंतन करें तो स्पष्ट है कि मनुष्य द्वारा जीवन में किया गया परोपकार का प्रत्येक कार्य यज्ञीय कार्यों की श्रेणी में आता है। इस परिभाषा के प्रथम भाग पर चिंतन करें तो पाते हैं कि देव दयानन्द ने अग्निहोत्र से अश्वमेध पर्यन्त कह कर समस्त प्रकार के वैदिक कर्मकांडों को इसमें समाहित करके और जो भी शिल्प व्यवहार वा पदार्थ विज्ञान लिखकर सृष्टि में होने वाली प्रत्येक क्रिया प्रतिक्रिया को वैज्ञानिक आधार देते हुए शामिल किया और अन्त में इसे दिशा देते हुए लिखा जो दूसरों के उपकार के लिए है। इतनी बड़ी विस्तृत व्यापक और यौगिक परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है कि परोपकार का प्रत्येक कार्य यज्ञीय कार्यों की श्रेणी में आता है। परोपकार का महत्व और इसकी पुष्टि करते हुए देव दयानन्द ने संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य लिखा है। ईश्वर को भी यज्ञरुप इसलिए कहा जाता है क्योंकि ईश्वर के सभी कार्यों सृष्टि के निर्माण पालन न्याय और संहार सभी में रहने वाले सभी प्राणियों के कल्याण और परोपकार की भावना ही निहित है और इसमें ईश्वर का स्वयं का कोई स्वार्थ नहीं है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि अग्निहोत्र जिसे नित्य कर्म बताया गया, एक प्रारम्भ है अन्त नहीं। यदि हम गाड़ी की टिकट तो ऑनलाईन बुक करवा लें परन्तु घर से स्टेशन समय पर जाकर गाड़ी पकड़ने का पुरुषार्थ न करें तो अपने लक्ष्य या गन्तव्य तक नहीं पहुँच पाएँगे और इस प्रकार टिकट लेना भी व्यर्थ हो जाएगा। ठीक इसी प्रकार अग्निहोत्र दैनिक यज्ञ के उपरांत इसे अपने जीवन के प्रत्येक कार्य में धारण करने का पुरुषार्थ करने से ही हम जीवन को यज्ञमय बना सकते हैं। संक्षेप में जिस प्रकार हवन कुंड में यज्ञ की अग्नि को स्थापित करते हैं ठीक उसी प्रकार अपनी आत्मा में सत्य ज्ञान की अग्नि को उद्बुद्ध करना होगा। जिस प्रकार हम दैनिक यज्ञ से पूर्व उस स्थान पर प्रत्येक सामग्री और अपनी स्वयं की शारीरिक सामाजिक और आत्मिक बल शुद्धता तय करते हैं, ठीक उसी प्रकार जीवन यज्ञ में हमें अपने समस्त कलुषित भावनाओं काम, क्रोध, लाभ, मोह ईर्ष्या आदि के पूर्वाग्रहों पर झाड़ू मार कर साफ करना होता है। जैसे अग्निहोत्र में हम प्रज्ज्वलित यज्ञ की अग्नि में घृत सिंचित समिधा दान करते हैं ठीक इसी प्रकार जीवन यज्ञ में हमें खुद जीवन से समस्त बुराइयों स्वार्थों को दूर करके काष्ठ से समिधा बनकर अपने सर्वस्व को अग्निस्वरूप परमपिता परमेश्वर को समर्पित करना होगा। जीवन यज्ञ करते हुए जब हम ईश्वर के प्रति पूर्णतया समर्पित हो जाएँगे तो समिधा की भाँति अग्निस्वरूप हो जाएँगे। ऐसा होने पर दुर्गुण दुर्व्यसन हमें परेशान नहीं कर पायेगा जैसे यज्ञ में आहूत अग्नि को समर्पित समिधा को कोई छू नहीं सकते वैसे जीवन यज्ञ में सत्य ज्ञान से प्रकाशित आत्मा में विराजमान सर्वअन्तर्यामी परमात्मा को हम संपूर्ण दुर्गुणों को त्याग समिध बनकर पूर्णतया समर्पित कर देंगे तो कोई सांसारिक कष्ट व्यथा हमें छू भी नहीं पाएगी। इसके उपरांत जल प्रसेचन की प्रक्रिया हमें जीवन में जल से शान्ति और यज्ञाग्नि से क्रान्ति का संदेश देती है। हमारे जीवन में प्रत्येक क्रान्ति अर्थात् प्रगतिशीलता उर्ध्वगामी दिशा शान्तिपूर्वक यानि समन्वयता से होनी चाहिए। अग्निहोत्र में औषधियुक्त सामग्री की आहुतियाँ वेद मंत्रों सहित हमें संदेश देती हैं कि जीवन यज्ञ में हमारा प्रत्येक कार्य ईश्वरीय आज्ञा का यथावत पालन करते हुए परोपकार की दृष्टि से करेंगे तो निश्चित रूप से हम अपने जीवन को यज्ञमय बनाने में सफल हो जाएँगे।

हमारे जीवन के यज्ञमय बनते ही हमारा प्रत्येक कार्य सामाजिक सर्वहितकारी होने के कारण ईश्वरीय न्यायव्यवस्था में कर्मफल सिद्वान्त के अनुरूप वांछित सुख विशेष अर्थात् स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हो जाएँगे। यह स्वर्ग जीवन के उपरांत मृत्यु के बाद किसी सातवें लोक की परिकल्पना नहीं होगी अपितु मिलकर संगतिकरण से परोपकार के यज्ञीय कार्यों के संपादन से हमारा जीवन, परिवार, समाज और राष्ट्र स्वर्ग बन जाएगा जिसमें सभी को वांछित सुख विशेष प्राप्त होंगे क्योंकि स्वर्ग मृत्यु के उपरान्त किसी लोक की कल्पना नहीं है अपितु अपने परिवार समाज राष्ट्र में सभी को सुख विशेष देकर इसे ही अपने जीवन में स्वर्ग बनाने की अवधारणा है इसलिए यह यज्ञ परोपकार के सामाजिक सर्वहितकारी कार्य हम सभी को एक साथ मिलकर यज्ञ के अवयव संगतिकरण करते हुए करने चाहिए।

602 जी एच 53
सैक्टर 20, पंचकूला
मो. 09467608686,9878748899

☞ पृष्ठ 05 का शेष

कौन प्रभु उपासना...

जो अलंकर सकता है। अलं का अर्थ है बस। जो घर परिवार को अलं कह सकता है वह आत्मा–परमात्मा के बारे में सोच विचार करके अपने जीवन को, समाज व राष्ट्र को उन्नत कर सकता है। प्रातः सोने को, टी.वी. को फालतु देखना सुनना–बोलना–विचारना इन सबको अलं करना है, सामान्य कार्यो को अलं करने स्वाध्याय, सत्संग, प्रवचन, ध्यान, मनन से अलंकृत जो व्यक्ति हो जाता है, वही आत्म कल्याण कर सकता है। ऐसे व्यक्ति प्रभु को भजते हैं, उसकी उपासना करते हैं।

महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति हर समय उपासना में रहता है। उपासना का अर्थ है समीप रहना। हम या तो प्रकृति अर्थात् संसार के समीप रहते हैं अथवा प्रभु के समीप रहते हैं। यदि हमें सचमुच कुछ पाने की लालसा है तो उस प्यारे प्रभु की उपासना करनी होगी जो हमारी मनोवांछित कामनाओं को पूर्ण कर सकता है और साथ ही मोक्ष की प्राप्ति भी करवा सकता है।

ओ३म् के ही ध्यान से, और ध्यान से ही योग तक,
जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक, यह ओ३म की पहुँचाएगा।

मन्त्री, आर्य समाज
माडल टाऊन, यमुनानगर
94164–46305

☞ पृष्ठ 06 का शेष

स्वामी दयानन्द सरस्वती...

प्रकार बढ़ती गई, उसे देखते हुए, उन्हें यथार्थ में युग पुरुष कहना ही उचित है।

मानवजाति के बौद्धिक चिन्तन और भाव समूह को प्रभावित और उद्वेलित करने वाले महापुरूषों की जीवनचर्या और जीवन दर्शन को अपने अध्ययन अन्वेषण, विवेचन और विश्लेषण का विषय बनाकर कीर्त्तन करना प्रबुद्ध मानव का एक स्पृहणीय गुण माना जा सकता है।

इस दृष्टि से भारत की राष्ट्रीय अस्मिता के प्रथम उद्घोषक किन्तु साथ ही साथ अपने कथन तथा आचरण के द्वारा समस्त मानवता के सार्वजनिक अभ्युत्थान के प्रेरक स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन और विचारों का चिन्तन, अनुशीलन एवं अनुकरण मानवजाति के लिए वरदान एवं सौभाग्य का कारण है।

वस्तुतः मूलशंकर अथवा दयाराम अथवा दयाल जी में जन्म से ही 'दयानन्द–तत्व' के बीज विद्यमान थे। परन्तु मूलशंकर किन–किन सीढ़ियों पर चढ़कर, कब और किस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती बना। वे कौन–कौन से चक्रव्यूह थे जिन्हें तोड़कर वह दयानन्द के पद को प्राप्त हुआ।

मूलशंकर को दयानन्द बनाने में उनके माता, पिता, स्वजनों, मित्रों एवं गुरूजनों के चरित्र तथा तत्कालीन परिस्थितियों का भारी हाथ है। परन्तु कौन से गुण, कर्म और स्वभाव उन्हें पितृ परम्परा, अथवा मातृ परम्परा अथवा गुरूजनों व स्वजनों से प्राप्त हुए, इस समस्त तथ्यों को जानने, मानने व विश्लेषण करने का कोई साधन या मापदण्ड हमारे पास उपलब्ध नहीं है। परन्तु दयानन्द के निष्कलंक चरित्र निर्माता माता–पिता, स्वजन, बन्धु, मित्र, गुरूजन व परिवेश जन्म भूमि व कर्मभूमि का विवरण जानना अत्यावश्यक है। यही इतिहास, घटनाचक्र आने वाली पीढ़ियों का, युग–युगान्त तक मार्गदर्शन करता रहेगा।

सह मंत्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
मंदिर मार्ग, नई दिल्ली

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 02 का शेष

आनन्द गायत्री कथा

लक्ष्मी है, परिवार है। परन्तु प्रत्येक समय यह चिन्ता लगी रहती है कि पता नहीं सुख रहेगा या नहीं। ज्ञात नहीं इसकी कब समाप्ति होगी। यह चिन्ता अच्छे-भले सुख को भी दु:ख से भरपूर कर देती है। और संस्मरण का दु:ख वह है जो पुराने दु:खों की स्मृति के कारण उत्पन्न होता है। मुझे अमुक रोग हुआ था, मुझपर अमुक अभियोग लगा था, मुझे अमुक स्थान पर आघात पहुँचा था, ऐसी-ऐसी बातें करके लोग व्यर्थ दु:खी होते हैं। परन्तु 'योगदर्शन' और 'सांख्यदर्शन' में तीनों प्रकार के जो दु:ख बताए गए हैं, इनमें से एक के अतिरिक्त शेष दो को क्या हम स्वयं उत्पन्न नहीं करते? परिणाम (परिवर्तन) से होनेवाले दु:ख पर तो हमारा कोई वश नहीं, परन्तु शेष दोनों हमारे वश में हैं। क्यों हमने अपने जीवन को आपत्ति का घर बना रखा है? आप कहेंगे-अच्छा आनन्द स्वामी! दो प्रकार के दु:ख तो छोड़ दिए। तीसरे प्रकार का दु:ख भी तो होता है, फिर दु:ख से बचें किस प्रकार?

परन्तु सुनो मेरी माताओ! सुनो मेरे भाइयो!

परिणाम तो संसार में होना ही है, फिर इसके कारण दु:खी काहे को होना? जो बना है, मिटेगा अवश्य। तुम्हारे दु:खी होने और चिन्ता करने से वह बचेगा नहीं। कई लोग आश्चर्य से पूछते हैं, संसार यदि ऐसा है तो ईश्वर ने इसको बनाया क्यों? लो, आज तुम्हें वेद भगवान् के प्रसंग से इस प्रश्न का उत्तर बताता हूँ। आज के बाद यदि कोई पूछे कि ईश्वर ने संसार की रचना क्यों की? तो उसे वेद के ये शब्द सुनाओ- **'श्रमेण तपसा सृष्टा'** (अथर्व. 12, 5,1)-ईश्वर ने संसार की रचना इसलिए की कि मनुष्य श्रम कर सके और धर्म के मार्ग पर चल सके। साथ ही वेद भगवान् ने कहा-

'नृत्ताय हसाय च।'

अर्थात् श्रम और तप के मार्ग पर चलता हुआ नाचे, हँसे और प्रसन्न रहे। प्रसन्न रहने के लिए जो शब्द वेद में आया है, वह आदेश के रूप में आया है। इस शब्द के द्वारा ईश्वर मार्ग ही नहीं दिखलाते प्रत्युत आदेश करते है कि नाचो, हँसो और प्रसन्न रहो। किन्तु आप कहते हैं कि यह तो बड़ी-बड़ी दार्शनिक बातें करता है तू। सीधी-सी समझ में आनेवाली बात कर! यह बता कि सुख और दु:ख क्या है? तो लो, सुनो सीधी-सी साधारण बात-इन्द्रियों की सन्तुष्टि होना ही सुख है और इनकी सन्तुष्टि न होना ही दु:ख है, अर्थात् अतृप्ति होना ही दु:ख है। सुख और दु:ख दोनों देव-भाषा संस्कृत के शब्द है। 'सु' शब्द का अर्थ है 'अच्छा' और 'दु' का अर्थ है 'बुरा'। 'ख' कहते हैं इन्द्रियों को। सुख का अर्थ है अच्छी इन्द्रियाँ। दु:ख का अर्थ है बुरी इन्द्रियाँ। अब बताओ कि यदि इन्द्रियों को अपने वश में कर लो तो दु:ख रहेगा कहाँ?

बार-बार एक ही बात मैं आपके मन में बैठाने का यत्न कर रहा हूँ कि जिसे आप दु:ख समझ बैठे हैं, वास्तव में दु:ख नहीं। अपने दु:ख को आप स्वयं उत्पन्न करते हैं। ऐसा करना बन्द कर दें तो 75 प्रतिशत दु:खों का अन्त स्वयं ही हो जाएगा।

कई लोग मेरे पास आते हैं; कहते हैं, 'हमारा भजन करने को जी चाहता है। यह भी मानते हैं कि भजन करने से मन में आनन्द उत्पन्न होता है। किन्तु क्या करें? भजन करने बैठते हैं तो जी नहीं लगता।' अरे भोले बच्चो! जी लगे किस प्रकार? तुमने स्वयं ही तो इसमें ईर्ष्या और घृणा की अग्नि दहका रखी है। इसे बुझा दो। जी अवश्य लग जाएगा। देखो, तुम्हें अपने अनुभव की बात सुनाता हूँ। मैं जब गृहस्थ-आश्रम में था, वर्ष में एक या दो मास के लिए किसी एकान्त स्थान में चला जाता था- अपने-आपको प्रभु के चरणों में अर्पित कर देने के लिए अपने साथ आटा, कुछ दाल और घी, छोटा-सा बिस्तर, थोड़े-से कपड़े लेकर, किसी जंगल में जाकर पत्तों की कुटिया बनाता था, उसमें रहने लगता था। दिन में एक बार दो रोटियाँ बनाकर खा लेता था, शेष समय अपने मन-मन्दिर में अपने प्रभु के दर्शनों का प्रयत्न करता था। एक बार घर में तैयारी करके जिला काँगड़ा के जंगल में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचा और हवन किया। इसके पश्चात् मौन धारण करके अपने कार्य में रत हो गया। मन के रोगों को देखने लगा। इन्हें दूर करने का यत्न करने लगा। परन्तु एक दिन, दो दिन, तीन दिन बीत गए। चित्त को शान्ति नहीं मिली। मैंने दु:खी होकर भगवान् से कहा-प्रभो! यह क्या बात है? तेरे द्वार पर आकर भी मेरे चित्त में शान्ति क्यों नहीं? दु:खी बैठा रहा। प्रातः 5 बजे स्नान करके फिर से भजन करने के लिए बैठा तो विचित्र बात हुई। ऐसा विदित हुआ जैसे भीतर से एक ध्वनि पुकार रही हो। स्पष्ट सीधे शब्दों में उसने कहा-'व्यर्थ है तेरा भजन! व्यर्थ है तेरा आत्म-चिन्तन! लाहौर में एक पुरुष है, उससे तू घृणा करता है। जब तक यह घृणा तेरे हृदय में रहेगी, तब तक मन को शान्ति नहीं मिलेगी। भजन में जी लगाना चाहता है तो जा, उससे पहले क्षमा माँग! इस घृणा को त्याग दे जो तेरे मन में है!' मैंने इस ध्वनि को सुना तो अशान्ति का कारण जैसे सजीव होकर मेरे सामने खड़ा हो गया। उसी समय मैंने अपना बिस्तर लपेटा। घर में वापस आया तो घरवाले विस्मय में थे कि यह इतना शीघ्र घर कैसे आ गया? किन्तु मैंने किसी से बात नहीं की। सामान रखा और सीधे उस सज्जन के घर गया। यहाँ उनका नाम नहीं लूँगा। उनके मकान पर जाकर पुकारा। वह पुकार को सुनकर बाहर आए। आश्चर्य से बोले, "आप?" मैंने पगड़ी उतारकर उनके चरणों में रख दी; बोला, "मैं क्षमा माँगने आया हूँ, मुझे क्षमा करना होगा।" वह आश्चर्य करने लगा कि इसे क्या हो गया? मैंने कहा, "आश्चर्य में मत पड़ो! जंगल में अज्ञातवास के लिए गया था। वहीं से अन्तरात्मा की अन्तर्ध्वनि हुई। मैं आत्मचिन्तन छोड़कर सीधा यहाँ आ गया। आप क्षमा नहीं करेंगे तो मेरे चित्त को शान्ति नहीं मिलेगी।" यह सुनते ही उनकी आँखों में आँसू आ गए। अपने सीने से लगा लिया उन्होंने मुझको। वे भी रोए, मैं भी रोया। परन्तु इस रोने से घृणा की अग्नि शान्त हो गई। मैं वापस जंगल में गया, वहाँ भजन में बैठा तो चित्त में अपार आनन्द हुआ। फिर चित्त नहीं लगे, ऐसी बात हुई नहीं।

क्रमशः....

हिन्दू, मुस्लिम एकता कैसी?

हिन्दू जिसे अधर्म मानते हैं मुसलमान उसे ठीक मानते हैं। झूठ बोलना, धोका देना, हिन्दुओं को काफिर मानकर उन्हें निर्दोष होने पर भी प्रताड़ित करना, सताना, जान से मार देना, उन्हें मौत का डर दिखाकर मुसलमान बनाना, उनकी स्त्रियों से बलात्कार करना, उनकी सम्पत्ति को लूटना, उनके मन्दिर-मूर्तियों को तोड़ना-ये सब काम इस्लाम में उचित माने जाते हैं। **परन्तु हिन्दुओं में ये सब काम महापाप माने जाते हैं।** निर्दोष हिन्दू को अपने हाथ से मारने वाला मुसलमान 'गाजी' की सबसे बड़ी पदवी पाता है। हिन्दू से लड़ते हुए अगर मुसलमान मारा जाए तो वह शहीद कहलाता है। उसे मरने के बाद 72 हूरें-बहुत खूबसूरत नौजवान लड़कियां, शराब की नहरें तथ ऐशो आराम का और बहुत सा सामान मिलने की बात कह कर लड़ने के लिए उकसाया जाता है।

गाय, बकरी आदि गुणकारी पशुओं को 'हलाल' के नाम से तड़पा तड़पा कर मारना और फिर उनका मांस खाना इस्लाम में सही माना गया है। **हिन्दू गाय को मारना तो दूर उसे पैर से छूना भी पाप मानते हैं।**

भारत पर आक्रमण करने वाले महमूद गजनवी, मुहम्मद गौरी, बाबर आदि लोग मुसलमानों के आदर्श हैं जबकि इन आक्रमणकारियों ने हिन्दुओं पर अथाह अत्याचार किए हैं।

मुसलमानों के लिए स्त्रियां पुरुषों की खेती हैं। वे जैसे चाहे उनका उपभोग करें और जैसे चाहें उनके व्यवहार करें-उन्हें परदे में रखें, उन्हें डण्डे से पीटें, तीन बार 'तलाक' का शब्द बोलकर तलाक देकर घर से निकाल दें। एक पत्नी के रहते दूसरी, तीसरी व चौथी पत्नी ले आएं। अदालत में औरत की गवाही आधी है। **परन्तु हिन्दुओं में स्त्री का स्थान पुरुष के बराबर माना गया है। स्त्री से सदा ही प्रेम और सत्कार पूर्ण व्यवहार की बात हिन्दू शास्त्रों में कही गई है।**

मुसलमानों का भाईचारा मजहब का है, देश का नहीं। मुसलमान दुनियां में कहीं भी है वह उसका भाई है। मुसलमानों के लिए मजहब का रिश्ता पहले है और देश का बाद में। मुसलमान के लिए हिन्दू तो काफिर है। वह मुसलमान बन जाए तो ठीक, नहीं तो कत्ल किए जाने के काबिल है। इस्लाम में एक मुसलमान का गैर मुसलमान से मित्रता करना अपराध माना जाता है।

जेहाद- गैर मुसलमानों से हथियारबन्द संघर्ष करने का नाम जेहाद है। गैर मुसलमानों को मुसलमान बनाने के लिए सब प्रकार के हथकण्डे अपनाना व बल का प्रयोग करना, अगर न बनें तो उन्हें जान से मार देना जेहाद है। जेहाद इस्लाम में सबसे अधिक पवित्र काम माना जाता है।

कुरान- कुरान मुसलमानों का पवित्रतम ग्रन्थ है। कुरान की इस बात को मानना मुसलमानों के लिए अनिवार्य है। कुरान में लिखी किसी बात पर भी शक करना इस्लाम में अपराध है। कुरान में छः हजार से अधिक आयतें हैं। उनमें लगभग एक तिहायी आयतें ऐसी हैं जो गैर मुसलमानों के प्रति नफरत फैलाती हैं और बहुत सी आयतें ऐसी हैं जो गैर-मुसलमानों पर अत्याचार करने तथा उन्हें तड़पा कर जान से मारने का आदेश देती हैं।

लगभग 1400 साल पहले मुहम्मद ने इस्लाम की स्थापना की थी। मुहम्मद को मुसलमान पैगम्बर मानते हैं और उसका अनुसरण करना अपना धर्म मानते हैं। मुहम्मद ने अपने जीवन में नौ शादियां की थीं। आखिरी शादी 52 वर्ष की आयु में छः वर्ष की लड़की से की थी।

हिन्दुओं का सारा साहित्य हिन्दी व संस्कृत भाषा में हैं जबकि मुसलमान उर्दू, अरबी, फारसी को अपनी भाषा मानते हैं और वे साहित्य जिसे वे अपना मानते हैं इन्हीं भाषाओं के हैं।

कृष्ण चन्द्र गर्ग,
831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा,
दूरभाष : 0172-4010679

www.thearyasamaj.org

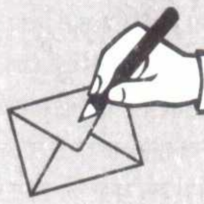

पत्र/कविता

क्या यह न्यायालय है?

आर्य समाजों के विचार प्रायः सामान्य अदालतों द्वारा ही निपटाए जाते हैं। रजिस्ट्रार का कार्य तो, प्रायः फर्मस्–सो साइटीस–संस्थाओं–संगठनों–ट्रस्टों आदि का ही पंजीकरण और तीन वर्षों के बाद तक नवीनीकरण करना होता है जब पिछले 3 वर्षों का आय–व्यय का विवरण जमा करा दिया जाता है। डिप्टी रजिस्ट्रार प्रत्येक मण्डल में होता होगा क्योंकि उत्तर प्रदेश राज्य बड़ा है। डिप्टी रजिस्ट्रार सम्भवतः राज्य में 18 तो होंगे क्योंकि 75 जिलों के लिए 18 मण्डल हैं।

क्या डिप्टी रजिस्टार को मुकदमें सुनने और निर्णय देने का वैधानिक अधिकार है? अगर है तो यह समानान्तर न्याय व्यवस्था एक देश में कैसे हो सकती है? आर्य वकीलों से निवेदन है कि उपरोक्त प्रश्नों पर अपनी राय दें।

इन्द्रदेव गुलाटी,
5/491, बुलन्दशहर
उत्तर प्रदेश– 203001

****

श्रम और कर्म को सदैव उचित स्थान मिलता रहे

सम्पादक महोतदय को 'पदमश्री' सम्मान के लिए साधुवाद। आपके श्रम और कर्म को सदैव उचित–उपयुक्त स्थान मिलता रहे एवं समर्थकों–अनुयायियों के सद्प्रयासों की ओर चलने का संदेश मिले, इन्हीं भावनाओं के साथ बधाई और अभिनन्दन।

हृदय में हो दिलचस्प, राष्ट्र प्रेम भावना।
फिर तो मुश्किल नहीं है, मुश्किलों का सामना।।
नारी हित में करें, दिलचस्प जतन विधान।
गणिकाओं का मिटे, जग से नाम निशान।।

दिलचस्प
चूरू–331001
राजस्थान

****

होली पर विशेष

मिलकर होली पर्व मनाओ

सकल विश्व के सब नर–नारी, मिलकर होली पर्व मनाओ।
प्रेम प्यार का रंग वर्षाओ, छूआ–छूत का रोग मिटाओ।।
नव शस्येष्टि यज्ञ होलिका, जिसे लोग होली कहते हैं।
महापर्व है फिर इस दिन क्यों, मदिरा के दरिया बहते हैं।।
जुआ खेलते महा मूढ़जन, अज्ञानी वे दुख सहते हैं।
चोरी जारी नीच कर्म कर, जीवनभर व्याकुल रहते हैं।।
नव शस्येष्टि महायज्ञ का, नादानों को महत्व बताओ।
प्रेम प्यार का रंग वर्षाओ, छूआ–छूत का रोग मिटाओ।।
फाल्गुन मास पूर्णमासी को, पर्व मनाया यह जाता है।
पिछला वर्ष बीत जाता है, अगला वर्ष निकट आता है।।
पक जाती है फसल रबी की, हर नर–नारी हर्षाता है।
आर्यों का इस महापर्व से, आदिकाल से ही नाता है।।
यज्ञ हवन, पुण्यदान करो सब, स्वर्ग पुनः धरती पर लाओ।
प्रेम प्यार का रंग वर्षाओ, छूआ–छूत का रोग मिटाओ।।
अच्छी तरह समझा लो प्यारो! पर्व निराला है यह होली।
अब तक जो होली सो होली, सबसे बोलो मीठी बोली।।
मिलो परस्पर गले साथियो, बना–बनाकर अपनी टोली।
मानव हो मानवता धारो, बात मान लो तुम अनमोली।।
परमार्थ के काम करो तुम, सर्व जगत् को सुखी बनाओ।
प्रेम प्यार का रंग वर्षाओ, छूआ–छूत का रोग मिटाओ।।
प्रातः उठकर होली के दिन जगदीश्वर से ध्यान लगाओ।
मात–पिता के चरणों को छू, संध्या करके हवन रचाओ।।
घी सामग्री की आहुतियाँ, अग्नि देव को भेंट चढ़ाओ।
पर्यावरण सुधारो जग का, प्रदूषण को दूर भगाओ।।
पावन वैदिक धर्म निभाओ, सारे जग में आद पाओ।
प्रेम–प्यार का रंग वर्षाओ, छूआ–छूत का राग मिटाओ।
जुआ खेलना, मदिरा पीना, मानव का यह धर्म नहीं है।
उग्रवाद–आतंक मचाना, याद रखो शुभ कर्म नहीं है।।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, बनो तपस्वी परोपकारी।
राम, कृष्ण, दयानन्द बनो तुम, गुण गाएगी दुनिया सारी।।
"नन्दलाल निर्भय" अब जागो! जग में नाम अमर कर जाओ।
प्रेम प्यार का रंग वर्षाओ, छूआ–छूत का रोग मिटाओ।।

– पं. नन्दलाल निर्भय –
बहीन, जनपद–पलवल, हरियाणा
चलभाष: 9813845774

रेलवे स्टेशनों पर क्षेत्रीय सांस्कृतिक धरोहर प्रदर्शित हों

समस्त भारत विभिन्न सांस्कृतिक उपलब्धियों से भरपूर है। क्या ऐसा सम्भव है कि प्रत्येक रेलवे स्टेशन पर उस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहरों को चिन्हित किया जाये जिससे पर्यटक उन धरोहरों को पहचान सकें तथा स्वदेशी के प्रति प्रोत्साहित हो जायें।

यह खेद है कि हम विदेशी सांस्कृतिक धरोहरों को तो प्रोत्साहन देने में तत्पर रहते हैं परन्तु स्वदेशी उपलब्धियों की अवेहलना करते हैं। ऐसा क्यों? विश्वास है कि माननीय रेल मन्त्री उचित निर्णय लेने का प्रयास करेंगे।

कृष्ण मोहन गोयल
113–बाजार कोट
अमरोहा

****

यह संयोग था या प्रार्थना, कहा नहीं जा सकता

आदरणीय डॉ. पूनम सूरी जी उन को मिली 'पद्मश्री' की उपाधि के सत्पात्र हैं। इस घोषणा से यह सम्मान स्वयं गौरवान्वित होगा। सूरी जी जिस निष्ठा तथा परिश्रम से सभा के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं, इससे आर्य समाज की यशोवृद्धि हुई है। सूरी जी में पूज्य आनन्द स्वामी जी के संस्कार विद्यमान हैं। मैं इस सम्मान पर सूरी जी का अभिनन्दन करता हूँ।

आर्य जगत् में 'श्रद्धा का चमत्कार' कुछ ऐसे शीर्षक से समाचार छपा है जिसमें बताया गया कि महामृत्युञ्जय मन्त्र के जप से कष्टदायक जीवन से छुटकारा मिल गया। समाचार के शब्द इस समय मेरे सामने नहीं हैं। मेरा इसमें बिल्कुल भी विश्वास न था।

मैं कुछ वर्षों से 1–1 महीने के लिए प्रचारार्थ महाराष्ट्र जाता रहा हूँ। एक प्रसिद्ध समाज जिसका नाम इस समय स्मरण नहीं, वहां मेरा तथा नागपुर निवासी श्री सुरेन्द्र जी का प्रचार कार्यक्रम था। प्रधान लेखराज जी थे जो निष्ठावान कार्यकर्ता थे। उनकी धर्मपत्नी कई दिन से मरणान्त अवस्था में चारपाई पर थीं। प्राण नहीं निकल रहे थे। लेखराज जी ने हमसे महामृत्युञ्जय यज्ञ कराया तथा हम सबने उनके यथाशीघ्र प्राणान्त की प्रार्थना की। आश्चर्य हुआ कि 2–3 दिन बाद ही वे परलोक सिधार गयीं। यह संयोग था, या प्रार्थनाफल, कहा नहीं जा सकता। प्रार्थना में शक्ति अवश्य है, यह तो अनुभूत है।

रघुवीर वेदालंकार
बी/266, सरस्वती विहार
दिल्ली–110034

****

उचित मार्गदर्शन हो तो बदल सकती है हीन भावना

आपके बारे में टंकारा समाचार (जनवरी 2016/17) में आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा जी के विचार सटीक लगे। बधाई! मैं भी अपने को इन विचारों से जोड़ना चाहूँगा।

संगठन सूक्त की भावना में आप कुछ पग उठावें ताकि आर्य समाज का संगठन समृद्ध बने। तीन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं का एकीकरण करके इन्हें डी.ए.वी. के साथ जोड़कर बल प्रदान करे। इस संकल्प को पूरा कर पुण्य के भागी बनें। अग्रिम धन्यवाद। आ.स. (अनारली) के 92 वार्षिकोत्सव में आपके दिए उद्बोधन का विवरण पढ़कर भी प्रसन्नता हुई।

हमें 70 वर्ष स्वतंत्र हुए हो गए हैं परन्तु अभी भी हम **दास भावना** से ग्रसित हैं। क्यों? हमें गर्व है कि हमें महर्षि दयानन्द ने वैदिक विचार दिए। परन्तु आज भी हम अपना नाम पूर्ण हिन्दी में लिखने में गर्व अनुभव नहीं करते। आप यदि उचित मार्ग दर्शन करेंगे तो यह हीन भावना बदल सकती है। कम से कम आर्यसमाज/आर्य सभाओं से जुड़े लोग तो अपना नाम पूरा हिन्दी में लिखें।

आप उचित मार्गदर्शक एवं संदेश द्वारा इस **वृत्ति की समाप्ति के पग उठायें**, ऐसी प्रार्थना।

रामभज
126/राजा गार्डन
नई दिल्ली–15

****

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज रावतभाटा का स्वर्ण जयंती समारोह सम्पन्न

आर्य समाज रावतभाटा का 50 वां वार्षिक उत्सव, स्वर्णजयंती के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में प्रातःकाल डॉ. सुदर्शन सिंह ने योग शिविर व डॉ. एम. एल परिहार ने वैकल्पिक चिकित्सा शिविर का संचालन किया। आचार्य यशवीर के ब्रह्मत्व में गुरुकुल भुसावर की ब्रह्मचारिणियों एवं गुरुकुल मलारना के ब्रह्मचारियों ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञोपरांत डॉ. हरीश चतुर्वेदी (चिकित्सा अधीक्षक) ने ध्वजारोहण किया। ध्वजगान के बाद बच्चों ने मंत्र पाठ व शंख ध्वनि से वातावरण गुंजायमान कर दिया।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक मोहित कुमार शास्त्री (बिजनौर–उ.प्र) ने इस कार्यक्रम में अमृतोपदेश देकर आर्य जनों को विमुग्ध कर दिया।

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान आचार्य यशवीर (गुरुग्राम, हरियाणा) ने अपने उपदेश में यथा योग्य उपकार लेने को सही पूजा बताया और कहा की विद्या ग्रहण करने के लिये श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार आवश्यक हैं। आचार्य ने बताया कि वानप्रस्थ की अवस्था के बाद भी मोहवश धर नहीं छोड़ना मानव के दुःखों का कारण है। वानप्रस्थ ही ज्ञानार्जन कर संन्यासी बन समाज में ज्ञान का प्रकाश करता है। आश्रम व्यवस्था का पालन न होना आर्यों की दुर्दशा व कमी का कारण है।

कार्यक्रम में जड़ी–बूटी प्रदर्शनी, विशाल वैदिक साहित्य प्रदर्शनी, विशाल शोभायात्रा बाल सम्मेलन में विभिन्न विद्यालयों के छात्र/छात्राओं द्वारा वैदिक विचारों पर आधारित एकांकी समूहगान, एकल भजन गायन प्रस्तुत किए गये। इस अवसर पर कोटा, खेडा रसूलपुर, बेगूं, निम्बाहेडा, चित्तोड़गढ़ के आर्यों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। 50 वर्षों कि उपलब्धि दर्शाने वाली एक भव्य स्मारिका का विमोचन किया गया।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्डा ने मेहमानों के लिये भोजन, रहने कि व्यवस्था व आर्यसमाज कि साज सज्जा को सराहा। अथक परिश्रम व पूर्ण सर्मपण से इस स्वर्णजयंती समारोह को सफल बनाने वाले मंत्री ओमप्रकाश आर्य व प्रधान नरदेव आर्य को पगड़ी व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

डी.ए.वी. पिहोवा के 1200 बच्चों ने 'क्रासकण्ट्री' दौड़ में भाग लिया

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पिहोवा में क्रॉस–कंट्री रेस का पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस रेस के बारे में जानकारी देते हुए स्कूल के प्रधानाचार्य श्री एन.सी. बिंदल ने बताया कि यह रेस तीसरी से बाहरवीं कक्षा तक के छात्र–छात्राओं के लिए थी, जिसमें स्कूल के लगभग 1200 बच्चों ने भाग लिया। इस रेस के लिए पूरे स्कूल को चार दलों में बांटा गया – दयानंद, श्रद्धानंद, हंसराज तथा विवेकानंद! इस रेस में लड़को में हसंराज दल जीता तो लड़कियों में दयानंद दल में बाजी मारी। ओवरआल ट्राफी दयानंद दल के नाम रही।

पुरस्कार वितरण समारोह के लिए चंडीगढ़ से श्री राम गोपाल जीएस.पी. (सी.बी.आई) मुख्यातिथि के रूप में पधारे। समारोह का आरम्भ मुख्यातिथि जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके हुआ। इस अवसर पर स्कूल के बच्चों ने एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसने आये हुए मेहमानों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रतियोगिता में तीसरी से बाहरवीं कक्षा तक आठ वर्गों में विभाजित छात्र–छात्राओं ने 81 मैडल जीते, जिन्हें मुख्यातिथि के कर–कमलो से प्राप्त करके बच्चे बेहद गौरवान्वित अनुभव कर रहे थे। कार्यक्रम के अंत में स्कूल के प्रधानाचार्य श्री एन.सी. बिंदल जी ने मुख्यातिथि व आये हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर स्कूल के सभी अध्यापक–अध्यापिकाएँ व मॉन–चिनिंग स्टाफ मौजूद रहा।

स्मृति-दिवस पर याद किए गए एन.डी. ग्रोवर

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, भरकुडिया, डेहरी ऑन सोन बिहार में महात्मा नारायण दास ग्रोवर की पुण्य तिथि स्मृति दिवस के रूप में मनायी गयी। इस अवसर पर वैदिक रीति से यज्ञ किया गया। प्राचार्य बासकी प्रसाद ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए एन.डी. ग्रोवर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि "ग्रोवर साहब एक विलक्षण प्रतिभा के धनी एवं सच्चे कर्मयोगी होने के साथ बिहार में डी.ए.वी. संस्था के उन्नायक भी थे। ग्रोवर साहब का सम्पूर्ण जीवन शिक्षा क्षेत्र के लिए ही समर्पित था। वे आजीवन शिक्षा का दीप जलाने एवं समाज के हरेक वर्ग को लाभान्वित करने के लिए प्रयास करते रहे।

प्राचार्य ने कहा कि हम सभी को एन.डी. ग्रोवर साहब के जीवन चरित्र से प्रेरणा लते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों द्वारा भजन–गीत आदि प्रस्तुत किया गये। विद्यालय प्रबंधन द्वारा 150 से अधिक गरीब बच्चों को पाठ्य सामग्री–कॉपी, कलम, पेन्सिल, रबर, कटर, तथा मिठाई के पैकेट भी वितरित किये गये।

O Lord, You are strength;
make me strong,
You are radiance; make me radiant.

You have righteous anger;
let me be strict with the wrongdoer.

You are the Victorious One;
lead me to victory.

तेज हो तुम, तेज से मुझको भी भर दो
शौर्य हो, मुझको बनाओ शूर अनुपम।
देव, तुम साक्षात् बल हो, बल मुझे दो।
ओज हो प्रभु, मुझे ओजस्वी बनाओ।
रोष हो तुम, रोष मुझमें भी जगाओ।
तुम विजेता, पापियों पर आक्रमण कर
रौंदने की शक्ति दो भरपूर मुझको।

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 01/02-03-2017
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

डी.ए.वी. एच.सी.एल. मलांजखण्ड में योगासन एवं प्राणायाम शिविर सम्पन्न

डी.ए.वी. एच.सी.एल. पब्लिक स्कूल, मलांजखण्ड, जिला–बालाघाट (म.प्र.) में योगासान एवं प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया गया। योग प्रशिक्षिका कु. अंकिता शुक्ला, एम.ए.योग, कु. वैशाली पाण्डे, एम.ए. नैदानिक मनोविज्ञान एवं कु. मीनाक्षी रावत, एम.ए. नैदानिक मनोविज्ञान (देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुंज, हरिद्वार) ने विद्यार्थियों को योग एवं प्राणायाम की शिक्षा दी। ईश्वर के निज नाम 'ओ३म्' तथा गायत्री मन्त्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। योग की जीवन में उपयोगिता एवं महत्ता पर प्रकाश डालते सभी प्रकार के आसन जैसे– सर्वांगासन, भुजंगासन, धनुरासन, ताड़ासन, गोमुख आसन, भ्रामरी, उत्तानपादासन, मर्कटासन, सूर्यनमस्कार, प्राणायाम, प्राण मुद्रा, पृथ्वी मुद्रा एवं लिंग मुद्रा जैसी विभिन्न यौगिकी क्रियाओं के माध्यम से मन को एकाग्र करने की विधि का सतत अभ्यास करवाया गया। बीच–बीच में विद्यार्थियों ने साथ मिलकर भजन प्रस्तुत किए। बच्चों के साथ शिक्षक समुदाय ने भी योगाभ्यास एवं ध्यान की साधना की।

कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य महोदय श्री आर. पी. मिश्रा ने उपस्थित सभी अभ्यागतों का आभार व्यक्त किया और कहा कि विद्यार्थी निश्चित ही इसमें लाभान्वित होंगे और चित्त की एकाग्रता के योगाभ्यासी बनेंगे। कार्यक्रम का समापन शान्ति पाठ के साथ हुआ।

डी.ए.वी. यमुनानगर में हुआ नयी यज्ञशाला का उद्घाटन

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल यमुनानगर में नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन श्री कर्णदेव काम्बोज (राज्य खाद्य एवं आपूर्ति मन्त्री, हरियाणा सरकार) द्वारा किया गया। उद्घाटन के बाद मुख्य अतिथि तथा शहर के गणमान्य अतिथियों ने यज्ञ किया। इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं जिनकी उपस्थित दर्शकों एवं अतिथियों ने भूरि–भूरि प्रशंसा की।

श्री काम्बोज ने अपने अभिभाषण में कहा कि इन प्रस्तुतियों से मेरे मन को सुकून मिला है। ऐसी इच्छा होती है कि कार्यक्रम को लगातार देखते ही रहें। यज्ञशाला के निर्माण के लिए 5 लाख रुपये की धनराशि अनुदान के रूप में दी। यज्ञशाला के सौंदर्य और विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों को देखते हुए उनके मुख से अनायास यही शब्द निकले कि "जो अनुदान मैंने दिया वह कम है मुझे और भी ज्यादा देना चाहिए था और कहा कि यह विद्यालय वैदिक मूल्यों के आधार पर प्रयासरत है। भविष्य में भी जब कभी मेरी सहायता की आवश्यकता पड़ती है तो मैं सहर्ष विद्यालय की मदद करने के लिए कृत संकल्प रहूँगा।

इस समारोह में यमुनानगर तथा जगाधरी के सभी आर्य समाजों के प्रधान तथा अन्य अधिकारी उपस्थित हुए। स्वामी दयानन्द के जीवन पर प्रस्तुत नृत्य–नाटिका ने सभी को मन्त्र–मुग्ध कर दिया तथा मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए धनराशि के रूप में लगभग 25000 हजार रुपए पारितोषिक के रूप में दिए।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री वी.एस.ठाकुर ने यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ईश्वर के साथ समन्वय स्थापित करने के लिए यज्ञ श्रेष्ठ कर्म है। इसके साथ उन्होंने मुख्य अतिथि द्वारा यज्ञशाला के निर्माण हेतु दी गई राशि के लिए कृतज्ञता प्रकट की। अन्त में प्रधानाचार्य जी ने सभी आगन्तुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

स्वामी शक्तिवेश बलिदान दिवस धूमधाम से मनाया गया

वैदिक सत्संग मण्डल समिति, झज्जर, के तत्वावधान में आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी शक्तिवेश जी का 28वां बलिदान दिवस, मोहल्ला टिल्ला शिव मन्दिर के सामने, चौक में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्य बालेश्वर रहे। यजमान देवेन्द्र पंडित रहे और कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी धर्ममुनि, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ ने की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता कवि सम्राट् सारस्वत मोहन 'मनीषी', दिल्ली रहे। उन्होंने अपनी कविता पाठ से जनसमुदाय को देश भक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत कर दिया और खुब तालिया बटोरीं। वीर रस की कविताओं और स्वामी शक्तिवेश के जीवन पर आधारित कविताओं को सुनकर श्रोता मन्त्र मुग्ध हो गये।

"अहिंसा सर्वोत्तम मन की कस्तूरी है।
दुष्ट नहीं माने तो हिंसा बहुत ज़रूरी है।"

कवितापाठ को बहुत सराहा गया। स्वामी धर्ममुनि, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, सत्पाल वत्स, यज्ञमुनि, सूर्यदेव, प्रेमदेव खुडल, आचार्या अरविन्द गार्गी, पं. जयभगवान आर्य, मण्डल समिति अध्यक्ष जीन्द, पं. रमेश चन्द्र वैदिक, आदि ने अपने सम्बोधन में स्वामी शक्तिवेश जी द्वारा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, वैदिक आश्रम रिवाड़ी, गुरुकुल धासेड़ा किशनगढ़, में किये गए सुधार कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला और उनकी सेवाओं से प्रेरणा लेने का आहवान् किया तथा उनके बताये मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। पं. रमेशचन्द्र वैदिक, श्री धनीराम बेधड़क, मथुरा, ईश्वर सिंह तूफान ने अपने मधुर भजनो द्वारा स्वामी दयानन्द का संदेश दिया और वेदों के अनुसार अपना जीवनयापन करने पर बल दिया। कार्यक्रम का संयोजन पं. जयभगवान आर्य ने किया और प्रबंध व्यवस्था श्री वेदप्रिय आर्य ने की।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**